संपादक
गणेश खुगशाल 'गणी'

किताब समीक्षा

गीत उत्तम छन
भाव सुन्दर छन
ल्हे ल्यूंलो मोल
उधार मा एक
अर मुफ्त मा द्वी

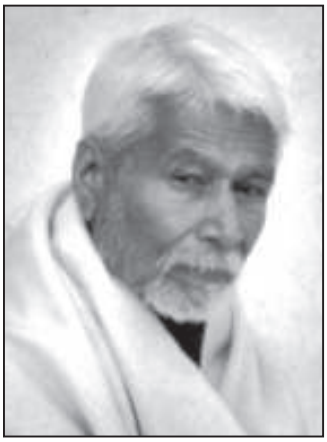

कन्हैयालाल डंडरियाल

धाद

साहित्य अर संस्कृति की मासिक पत्रिका

• वर्ष : 2 • अंक : 9 • अप्रैल, 2017 RNI No. UTTGAR/2015/63986 • मोल ₹ : 20/-

संकल्पना : लोकेश नवानी
संस्थापक सम्पादक : सुशीला बडोला
सम्पादक : गणेश खुगशाल 'गणी'
संसाधन : विनोद घनशाला, जगदीश बडोला
जगदीश नेगी
अन्वार : राकेश 'राका'
आकल्पन : चन्द्रविजय अरोड़ा, आशीष बलूनी
भितरा रेखांकन : लता शुक्ला
कार्टून : आशीष कुमार
सम्पादकीय कार्यालय : धाद
126, विकास मार्ग पौड़ी-246 001
दूरभाष : +91-9412079537
ई-मेल : dhad.garhwali@gmail.com
एक सालै सदस्यता : 220/- रुप्या
दिल्ली सम्पर्क : ए-162/UG-4, दिलशाद कॉलोनी,
दिल्ली-110 095
सम्पर्क :09013285624

पत्रिका मा छप्यां विचार लिख्वारू का अपणा विचार छन, यां खुणै सम्पादक मंडल को राजि होण जरूरी नी छ।
facebook : http ://www.facebook.com/dhaadpatrika

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक गणेश खुगशाल 'गणी' द्वारा
प्रगति प्रिंटिंग प्रेस, एजेंसी चौक पौड़ी,
पौड़ी गढ़वाल से मुद्रित कराकर 'धाद' कार्यालय : 126
विकास मार्ग पौड़ी-246 001 से प्रकाशित.
संपादक : गणेश खुगशाल 'गणी'

गढ़वाळि कविता आज

ये बगत जब हम कविता कि बात करणा छौं तबारि पूरि दुन्या मा इन छ लगणों जन यीं मुंथ्था बिटि मनख्यात लोप होणी हो। सब कुछ विलोप होयूं जन बोलेंद प्यार-पिरेम छाया-माया बि विलोप होयीं। उपभोक्तावाद का इना जजाळ मा सर्या दुन्या इन फंसी छ कि जिकुड़ा को उमाळ जो कवितौं मा बौगदो छौ तै खुणि बि सूखो पड़िगे।

अब सब ताकतवर होण चाणा छन अर ताकत वा बि रुप्यों कि ताकत अर जौं नर रुप्यों कि माया छ स्यूं का सबि कुकर्म वैध, स्यू खेलों कि हिंसा सुन्दर अर तौंकि करी हत्या कलात्मक बणैकि समाज का वास्ता जरूरी बतैकि अपणा समाज मा तौंतै थरपणै चाल चलेणी छन।

ये बीच सत्ता जादा र्‌वेलि ह्वेनि किलै कि वख क्वांसा पराण वळा त पौछि बि नि साका इन मा कविता कव्यूं अर कुछ पढदरों तैं छोड़ी कैकि चिंता छ ? बोलि नि सकदा। कविता पर गिच्चा मड़काण वळा अर जैरीलि हैंसि-हैसण वळा बि भौत छन तब बि कविता खड़ि होणी अपणां समाज मा या कविता कि अपणि ताकत छ, अर यी ना कविता इना बुरा टैम पर बि जौं खतरौं मा छ वूंई खतरौ का खिलाफ अपणि बात बोलद-बोलद अगनै लपाग मरणी छ।

आज कि राजनीति मा कविता खुणै क्वी जगा नि बचीं पर कविता राजनीति पर अपणा कटाक्ष इना सुंदर ढंग से अर इथगा जादा करणी छ कि जन कवितौ मूल विषय राजनीति ह्वेगे हो। राजनीति पर कविता बड़ा सलीका से अर मर्यादित ढंग से औणी छन जबकि कविता पर राजनीति बड़ा गुस्सा अर आक्रोश का दगड़ि होंद। कविता अर समाज को रिस्ता पैलि से कठिण अर विचार अर संवेदना का स्तर पर जादा अळझ्यां छन इनि तणातणि मा कविता न अफुखुणै नयी जगा बि बणै गढ़वळि कविता को अपणों एक खांचो छौ डांडि-कांठि, गौं-गुठ्यार, घर-गौ, खैरि-बिपदा अर खुद को तैं से भैर ऐकि कविता अपणि एक अलग अन्वार का दगड़ि बि दिखेणी छ।

ये दौर मा गढ़वाळि कविता आम आदमि तक अलग ढंग से बि पौछणी छ। दुन्या कि और भाषौं मा कविता छपे कि अर पैढ़ी पौंछि गढ़वाळि कविता छपेण अर पढ़ेण से जादा सुणेकि आम आदमी तक पौछणी, य छपेणी अर पढ़ेणी उथगा नी छ जथगा सुणेणी छ। गढ़वाळि कविता कि य अपणि अलग अन्वार छ। गढ़वाळ मा हि ना बल्कि सबि जगा गढ़वळि कविता सुणणौ इन औंदन जन कौथिगेर कौथिग जांदन, कविता का ये आकर्षण मा नेता बि खैंचेकि औंदन वूंथै अपणि बात बोलणो अर कव्यूं तैं राजनीति पर कविता करणौ मंच एक दगड़ि मीलि जांद।

गढ़वाळ त खास कैरि गीतु को मुलुक छ गीतु का ये मुलुक कविता अपणि भाषा, विषय, दगड़ै आणा-पखाणा अर अपणा शब्दु कि ताकत ल्हेकि स्थापित होणी छ। यख कविता मा रड़दा डांडा, उजड़दा गौं कि कविता बि छन त डांड बस्यां मनख्यूं कि धै बि छन कि गौं बुलौणू, जो सुख सुविधौ मा गौं विसरगेनि तौ तैं अपणि धरति का स तन मजबूत निरोगि मनखि अपणि भूमि बिटि धै लगौंद कि सुणेदन यख भोग्यूं अर भुगत्यूं बि सच छ अर उम्मीद बि सच छ। यख हम तैं कविता को भविष्य अर भविष्य का समाज पर विचार कविता मा दिखेंदन यानि लोग अपणि कविता सुणणौं अपणि भाषा कि ताकत जणणौ वख पौंछदन जख तौ गढ़वाळि कविता मिलद।

गढ़वाळि कविता कि उमर लम्बि हो यांका वास्ता गढ़वाळि कविता को छपेणो अर पढ़ेंणो बि जरूरि छ। हां ये बगत सूचना संसार मा सोशल मीडिया का ये जमाना मा हैंसि खेलि अर गुडमार्निंग-गुडनाइट का बीच गढ़वाळि कविता की रिकार्ड क्लिपिंग का बीच लेखदरा अपणि कवितौ बि लेखणा छन जौं तै खूब पढ़ेणौ बि छ अर वो अपणि पच्छ्याण बि बणौणा छन।

• गणेश खुगशाल 'गणी'

ये मैने धाद 3

गढ़वालि कविता आज

- लोकभाषा आंदोलन मा कविता – वीरेन्द्र पंवार 5
- गढ़वालि कविता अर मंच – रमाकांत बेंजवाल 9
- गढ़वालि कविता अजकालै मेस – प्रीतम अपच्छ्याण 11
- गढ़वालि कवितों का माध्यम अर आज का समय कि चुनौति – डॉ० नन्द किशोर हटवाल 13
- आज का गढ़वालि कवि – ओमप्रकाश सेमवाल 15
- सुनकार मा आखरो उदंकार छ कविता – बीना बेंजवाल 18
- जौं कवितौंन मि कवि बणौं – मदन डुकलाण 20
- कविता मा लोक चेतना – गिरीश सुन्दरियाल 22
- किलै रंचे जौ कविता – नीता कुकरेती 26

कविता

- आँईर दादा! – महावीर रवांल्टा 19
- अक्कल, नाप, बरि, रौत जी – निरंजन सुयाल 29
- एक गंज्यळि गीत – गीतेश सिंह नेगी 31
- एक गंज्यळि गीत – पयाश पोखड़ा 32
- मैं उत्तराखंड बोनू छौं – कविता भट्ट 33
- गढ़वाळा विकासौऽ गीत – भगवतीशरण बुड़ाकोटी 34
- पीड़, फटकताळ, लालसा – दिनेश कुकरेती 35
- एक ढुंगो विकास को – देवेन्द्र उनियाल 37
- पहाड़ – प्रभात सेमवाल 40
- नौं धरी विकास – देवेश जोशी 41
- लोकल समैणा – हरीश जुयाल कुटज 42
- गिल्ली हम डण्डा क्वी – डॉ० सत्यानन्द बडोनी 43

लोक गाथा

- उदीना – राकेश मोहन कण्डारी 44

खबरसार

- थड़िया चौंफळौं को कौथीग सलाण मा – धमेन्द्र नेगी 46
- एक संस्था इनि बि– भलु लगद – शुभा बुड़कोटी 47

लोकभाषा आंदोलन मा कविता

वीरेन्द्र पंवार

जन्म : 13 सितम्बर, 1962
कृत्तियां : इनमा कनक्वे आण बसन्त, बीं, छ्वीं-बथ, गीत गौं का, कथगा खौरि हौर (अनुवाद)
सम्पादन : फोल्डर धाद परसुण्डाखाल-1994, 1995, 1998 फार्मा-मैग (फार्मेसी)-2011, एलिक्जिर (फार्मेसी)-2012 पत्र-पत्रिकाओं मा लेखन अर सम्पादन
सम्मान : स्व० दयालसिंह असवाल स्मृति सम्मान-2014 (अ०भा० उत्तराखण्ड महासभा)
सम्पर्क : 9897840537

लोकभाषा आन्दोलन जनि शब्दावलि गढ़वाळि समाज का वास्ता अब नयि बात नि रैगि। हालांकि या बात भी सै च कि आजकला दौर मा गढ़वाळि मा भाषा का बाबत आन्दोलन जनि छ्वीं बथ भौत पुराणीं नी। सच्चि बात या च कि गढ़वाळि मा भाषा आन्दोलन कि खुसर पुसर उन्नीस सौ अस्सी का दशक बटि सुणेण बैठि। गढ़वाळि मा भाषा आन्दोलन क्या च? प्रसंग ऐगि त इखमु या बात बतै देणि भी जरूरी लगणीं च! याँकि शुर्वात कख बटी, किलै अर कनक्वे ह्वे? भाषा आन्दोलन क्वी यनु आन्दोलन नी छ जख भाषा का वास्ता गढ़वाळि समाज अपणां झण्डा-डण्डौं ल्हेकि मैदान मा ऐ हो, या उत्तराखण्ड आन्दोलनै तरौं भाषा का वास्ता लोग बाग अपणिं बाड़ि सगोड़ि छोड़िक सड़क्यूँ मा उतरि होंन। गढ़वाळि भाषा तैं बचौंणां अर बढौंणैं मन्सा से शुरू कर्यां गढ़वाळि भाषा का कार्यक्रमु का जरिया खड़ा कर्यां एक आन्दोलन को नौं च भाषा आन्दोलन। जैकि मन्सा मोटा तौर पर अपणि दुदबोलि गढ़वाळि तैं भाषा का रूप मा स्थापित कन्न से च। या स्थापना सरकारी तौर पर त होलि ही, पर भाषा कि या स्थापना गढ़वाळि समाज का बीच होणीं भी जरूरी च, जै समाज कि या भाषा छ लोकेश नवानी गढ़वाळि मा ये भाषा आन्दोलन कि पवांण लगौन्दरा पैला मनखि छा। ई बात मा क्वी द्वी राय नी अर या बात छाळा पाणीं तरौं साफ च कि गढ़वाळि मा भाषा आन्दोलन का भगीरथ लोकेश नवानी छन।

यू भी संजोग च कि गढ़वाळि मा भाषा आन्दोलन कि शुर्वात राज्य कि राजधनी देरादूण से ह्वे। देरादूण राज्य बण्न से पैली बटी विकसित शहर का रूप मा जणें जान्द। सन् 1980 का दशक मा लोकेश नवानी अपणि सरकारी नौकरी मा पोस्टिंग पर दिल्ली बटी देरादूण ऐनि। दिल्ली मा तबारी गढ़वाळि का जण्याँ-मण्याँ साहित्य लिख्वार अबोध बन्धु बहुगुणा, कवि कन्हैयालाल डंडरियाल, प्रेमलाल भट्ट, ललित केशवान जि जना भौत रचनाकार गढ़वाळि मा लिखदा छा। देहरादूण मा रैण वाळा गढ़वाळि लोग अपणीं भाषा मा बोल्दा, बच्यान्दा भी छा, पर तबारी उ औरि समाजु का बीच अर सिक्कासौरि मा अफुतैं गढ़वाळि बतौंण मा झिजकदा छा। न केवल देरादूण बलकन गढ़वाळ मा रैण वाळा लोग भी गढ़वाळि थैं भाषा बोन्न पर

बिदकदा छा, हैंसदा छा अर मजाक उड़ौन्दा छा। उ बोलदा छा कि गढ़वाळि भी क्वी भाषा च, गढ़वाळि त बोलि च।

समाज कि ईं मानसिकता का बीच गढ़वाळि भाषा आन्दोलन कि शुर्वात सन् 1982 का वार-ध्वार लोकेश नवानीन देरादूण से करि। यू भी संजोग छ कि आन्दोलन कि शुर्वात नवानी जीन कविता से करि। नवानी जी बतान्दन कि 14 अगस्त 1984 का दिन नारी शिल्प कालेज देरादूण मा उयर्यूं कवि सम्मेलन आज तकौ सबसे बड़ु कवि सम्मेलन च। ये कवि सम्मेलन मा 65 कव्यूँन कविता पाठ करि। ईं तरौं से इख बटी गढ़वाळि भाषा आन्दोलन कि शुर्वात बोल सकदा। अर इखि बटी शामिल ह्वे भाषा आन्दोलन मा कविता। साल 1987 गढ़वाळि भाषा आन्दोलन का वास्ता समलौण्याँ साल बोले सकेन्द। ये साल गढ़वाळि पत्रिका का रूप मा धद कि शुर्वात पैलि दिल्ली बटी ह्वे अर बाद मा धद लोकेश नवानी कि अगल्यार मा देरादूण से छपण बैठि। देरादूण बटी छपण से धद पहाड़ का भित्र अर बाद मा चौछोड़ि पौंछण लगि। अपणि भाषा मा धद जनि पत्रिका छपे त गढ़वाळि भाषा का प्रति पढ़दरौं को ध्यान जाण बैठि। इख्मु इन याद दिलाण भी जरूरी च कि ये दौर मा चौतर्प नरेन्द्रसिंह नेगी जी का गीत गुंजण बैठगे छा। नेगी जी का गित्तु का कारण लोकसमाज मा गढ़वाळि भाषा का निब्त एक वातावरण बण्न मा बण्डी देर नि लगि। लोग धद का जरिया भाषा से जुड़दा गैनि। देखदै देखदा धाद पत्रिका से संस्था का रूप मा बदलेण बैठि। अर तब ह्वे लोकभाषा आन्दोलन कि शुर्वात अर लोकभाषा आन्दोलन मा चलि कविता को दौर। ये बीच धदन पौड़ी मा भी संस्था रूप ल्हे। लोकेश नवानी जीन ये लेख का लिख्वार संस्था का सचिव अर अबारी धद पत्रिका का सम्पादक गणि जी तैं साहित्य सचिव कि जिम्मदारी दे। धादन पौड़ी अर परसुण्डाखाळ मा कतगै कार्यक्रम उर्यैनि। पौड़ी मा काफी लम्बा समै तक कवि गोष्ट्यूँक दौर चलि। सन् 1992 मा पौड़ी का जिला पंचायत मा उर्यायूँ कवि सम्मेलन आज भी एक समलौण च। बाद मा जगा-जगौं धद कि शाखा बण्न से कार्यक्रमु मा तेजी ऐ।

इक्कीसवीं सदि का ये दौर से पैलि भी भाषा का वास्ता काम होणूं रै, वाँमा लम्बा समै तक समाज मा भाषा का गीत गुँजणां रैनि। यो दौर गीत-संगीत को दौर छौ। बनि बानि का लोकगायकों को दौर। यो गीत संगीत का दौर का युग पुरुष छन नरेन्द्र सिंह नेगी। ये दौर मा गवैयों कि भी भौत लम्बि लंगेत च, पर उ अब्बि अफु दगड़ा भाषा तैं उतगा नि हिटै सकनि या अज्यूँ बि नि हिटै सकणां छन। हालांकि यु अलग विषय च। गढ़वाळि मा गीत संगीत को यो दौर 1980 का दशक से ल्हेकि 21वीं सदि का शुर्वाति दौर तक चलि। हालांकि अब्बि भी चन्नूं च। अब्बि खतम नि ह्वे। इन बोल सकदा कि गीत संगीत अर गीत गाण वलौं कु यु दौर चलि इक्कीसवीं सदि का पैला दशक तक। ये दौर तक भाषा गीत संगीतै धैंण मा सवार हेकि ऐथर बढणीं रै। इनो दौर भी ऐ जब लोग गवैयों कि गयीं कैसेटु कि जग्वाल मा रौन्दा छा। आज सन् 2017 तक गढ़वाळि गीत संगीत कि ढाळ पंडाळ भी बदलेगि। ठीक येई दरम्यान भाषा आन्दोलन कवितौं का जरिया ऐथर बढणैं तकणा तकणि कन्नी रै। भाषा आन्दोलन थें गित्तु का जरिया एक माहौल मिलि, यांन कविता तैं समाजा बीच पौंछण मा जादा सहूलियत ह्वे।

येई दौर मा सन् 1983 मा दिल्ली बटी सरिता शर्मा का सम्पादन मा बुग्याळ अर बाद मा सहारनपुर बटी सुध नेगी का सम्पादन मा अंज्वाल। देहरादून बटी गढ़ऐना अर ईश्वरीदत्त उनियाल जी का सम्पादन मा रन्त रैबार, पूरन पन्त पथिक का सम्पादन मा गढ़वाळै धै।

ये दौर मा सन् 1984 का वार-ध्वार बी० मोहन नेगी जिन गढ़वाळि कविता पोस्टर कि शुर्वात करि। भाषा आन्दोलन मा वूँकि या अगल्यार अपणि तरौंकि बिगरैलि च। बी० मोहन जी का कविता पोस्टरुन गढ़वालि कव्यूँ थैं नइ-नइ अर अच्छि-अच्छि कविता लेखणों साँसु दे। याँसे बि भाषा का प्रति एक वातावरण बण्न मा मदत मिलि।

येई दौर मा धद से जुड़्याँ कुछ दगड़्योंन चिट्ठी पत्रि नौं से एक पफोल्डर कि छपै से शुरू करीक बाद मा येई नौं से एक गढ़वाळि त्रौमासिक पत्रिका छापि। ईं पतड़ि का

सम्पादक छन मदन डुकलान। तबारी बटी चिट्ठी पत्री भी भाषा आन्दोलन मा शामिल च।

सन् 1999 का वार ध्वार ऐथर बढ़दा भाषा आन्दोलन मा पौड़ी बटी बिमल नेगी जी का सम्पादन मा उत्तराखण्ड खबरसारन 14 साल से भी जादा समै तक भाषा आन्दोलन कि जवाबदरि सम्मालि।

ये पाक्षिक अखबार का जरिया बि गढ़वाळि का कतगै लिख्वार एकजुट एकमुट्ट रैनि। कतगै नया लिख्वार जुड़नि त कतगै स्थापित भी ह्वेनि।

मई सन् 2004 से रुद्रप्रयाग बटी लोकभाषा आन्दोलन मा एक हौर संस्था जुड़ि 'कलश'। कलश का कारबारी ओमप्रकाश सेमवाळ जीन गढ़वाळि कविता का जरिया लोकभाषा आन्दोलन थैं वास्तव मा एक आन्दोलन जनि शकल दे। वूँन कविता का जरिया भाषा आन्दोलन कि शुर्वात ये दौर का सबसे लोकप्रिय गायक, गीतकार नरेन्द्रसिंह नेगी जी थें दगड़ा ल्हेकि करि। लोकभाषा आन्दोलन मा कविता जब पैली बटी जन जन तक पौंछ्याँ नेगी जी का लोकप्रिय गित्तु दगड़ा लोखु तक पौंछि त लोगुन कविता भी हातों हात ल्हे। ठेठ गौं का भित्र कविता पौंछाणौं काम सौंगु काम नी। उ भी इतगा लम्बा समै तक। तबारी बटी अब तक कलश संस्थान इतगा जादा कवि सम्मेलन उर्ये यलिन कि आज कविता आन्दोलन का जरिया कलश नयु इत्यास बणौंणें तर्प बढणीं च।

इन बि नी छ कि गढ़वाळि मा लोकभाषा आन्दोलन से पैलि भाषा का वास्ता क्वी आन्दोलन नि छौ। हाँ या बात सै ह्वे सकदि कि गढ़वाळि मा क्वी भाषा आन्दोलन अर भाषा आन्दोलन जनि बात सुण्नम नि आए, पर ये दौर से पैलि भि गढ़वाळि भाषा मा साहित्य रंचेणूँ रै। गढ़वाळि मा कविता लिखेनि, गीत लिखेनि, उपन्यास, नाटक, कहानी लिखेनि, साहित्य कि तकरीब सब्बि विधैं मा काम होणूं रै। पर भाषा का वास्ता यकचोट्या काम धकना धरी ये दौर मा हि होणूँ च, जैकुतैं हम लोकभाषा आन्दोलन बुन्ना छाँ। पैलि कवि सम्मेलन होन्दा छा पर उ देश कि राजधानी दिल्ली या देश का औरि शहर जख गढ़वाळि रैन्दा छा, उखि तक सीमित रैनि। ये वजै से उ आन्दोलन कि शकल मा नि उभर सकि, जन कि ये दौर मा। कारण भी साफ दिखेन्दन। भाषन उखि त फलण फुलण जख भाषा बोले जान्दि। भैर त कवि सम्मेलन एक कार्यक्रम का बतौर उर्याये सकेन्द। हाँ भाषा का पक्ष मा या बात अच्छि मने सकेन्द कि अपणि धर्ति से भैर अगर कविता या गीत या औरि विधौं का जरिया भाषा भैर जान्दि त वख बस्याँ लोग ईं बात से प्रेरित ह्वे सकदा कि वूँतैं अपणि दुदबोलि नि भुलण चयेणीं च। उ दुदबोलि का वास्ता काम कर्या नि कर्या, या अलग बात च।

यो दौर जो इक्कीसवीं सदि का दुसरा दशक को दौर च, जै दौर मा बैठी यु आलेख लिखेणूँ च, ये दौर मा भाषा का हिसाबन गढ़वाळि भाषा का वास्ता अच्छु दौर नी। ये दौर मा गढ़वाळि का सामणि भाषा का रूप मा थरपे जाणु सौंगि सार नी। मि नकारात्मक नि बोन्नू छौं। पर या भौत ही ब्यावहारिक सि बात च कि जै दौर मा अंग्रेजी भाषा न केवल हमारा देश बलकन दुन्या कि सब्बि भाषौं कि धैण मा चढ़ी राज कन्नी हो, वे दौर मा हम गढ़वाळि जन्नि क्षेत्रीय भाषा का विकास कि बात इतगा दमदार तरीका से कन्ना छाँ। भाषा का वास्ता इतगा वजनदार तरीका से वकालत कन्नी हमारी मजबूरी को हिस्सा भी ह्वे सकदो। किलैकि हमतैं अपणिं भाषा का गायब होणैं फिकर सतौण बैठगि। गढ़वाळि का पक्ष मा अबारी या बात भौत अच्छि च कि गढ़वाळि अबारी बकैदा भाषा आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु मा च। अर ईं भाषा का बोलदरा अब अपणि भाषा कि कीमत पच्छ्याण्न बैठगेनि।

इक्कीसवीं सदि का ये दौर से पैलि भी भाषा का वास्ता काम होणूं रै, वाँमा लम्बा समै तक समाज मा भाषा का गीत गुँजणां रैनि। यो दौर गीत-संगीत को दौर छौ। बनि बानि का लोकगायकों को दौर। यो गीत संगीत का दौर का युग पुरुष छन नरेन्द्र सिंह नेगी। ये दौर मा गवैयों कि भी भौत लम्बि लंगेत च, पर उ अब्बि अफु दगड़ा भाषा तैं उतगा नि हिटै सकनि या अज्यूँ बि नि हिटै सकणां छन। हालांकि यु अलग विषय च। गढ़वाळि मा गीत संगीत को यो दौर 1980 का दशक से ल्हेकि 21वीं सदि का शुर्वाति दौर तक चलि। हालांकि अब्बि भी चन्नूं च। अब्बि खतम नि ह्वे। इन बोल सकदा कि गीत संगीत अर गीत गाण वलौं कु यु दौर चलि इक्कीसवीं सदि का पैला दशक तक। ये दौर तक भाषा गीत संगीतै धैंण मा सवार हेकि ऐथर बढणीं रै। इनो दौर भी ऐ जब लोग गवैयों कि गर्यीं कैसेटु कि जग्वाल मा रौन्दा छा। आज सन् 2017 तक गढ़वाळि गीत संगीत कि ढाळ पंडाळ भी बदलेगि। ठीक येई दरम्यान भाषा आन्दोलन कवितौं का जरिया ऐथर बढणैं तकणा तकणि कन्नी रै। भाषा आन्दोलन थें गित्तु का जरिया एक माहौल मिलि, यांन कविता तैं समाजा बीच पौंछण मा जादा सहूलियत ह्वे।

1982 से कवितौं का जरिया शुरू होयूँ यो आन्दोलन कार्यक्रम आज भाषा आन्दोलन का रूप मा थर्पेगि। येसे फैदा यो ह्वे कि ये भाषा आन्दोलन कि मन्सा जु पैलि खास लोगु तक सीमित छै, अब आम आदिम तक ये आन्दोलन कि मन्सा पौंछणीं छ। सब्बि लोग जण्न बैठगेनि कि यो भाषा आन्दोलन छ क्या च!

यो भाषा आन्दोलन कवितों का जरिया शुरू ह्वे छौ। गढ़वाळि कविता का मंच पर आज कव्यूँकि कि लम्बी लंगेत लगीं च। ये दौर तक लोकभाषा आन्दोलन कि द्वी बड़ी उपलब्धि छन-पैलि या कि ये आन्दोलन कि निरन्तरता कि वजै से गढ़वाळि जनमानस मा अपड़ि भाषा का निब्त कबि ज्वा 'इन्फीरियरिटी काम्प्लेक्स' मैसूस होन्दि छै, वा खतम ह्वे अर दगड़ा मा अपड़ि भाषा का निब्त गर्व कि भावना पैदा होणीं छ।

अर दुसरि या कि गढ़वाळि समाज गीत पसन्द (गितेर अर कौथिगेर) समाज छ। लोग ये भाषा आन्दोलन कि वजै से गढ़वाळि कविता सुण्न अर पसन्द कन्न बैठनि। आज गढ़वाळि कविता समाज मा स्थापित विध का तौर पर देखे जान्द। आज कविता गढ़वाळि समाज का बीच उपरि अर अजाण विध नि रैगि। इनो समाज जु आजादी का 70 साल बाद बि अपड़ि शिक्षा, स्वास्थ्य अर पाणि जनि आम जर्वतों कि लड़ै लड़नू हो, का वास्ता भाषा अर साहित्य जनि चीज अगर वेका सांस्कृतिक अंग का रूप मा शामिल दिखेन्द त या वे समाज का वास्ता कम बात नी।

येई दौर मा साहित्य का देखणन सबचुले जादा कविता संग्रै भि प्रकाशित ह्वेनि। न केवल कविता बलकन ये दौर मा साहित्य कि हौरि विधैं मा बि सब दौरु चुले जादा काम ह्वे। भाषा आन्दोलन का कारण एक वातावरण बण्नूँ च ज्यांसे लिख्वार लगातार बढणां छन।

इन भी बोल सकदा कि कविता मनखि कि संवेदनौं से जुड़ीं होन्द, इलै लोग कविता आसानी से बीन्ग जान्दन। बजाय साहित्य कि हौरि विधैं का। कवि सम्मेलन पैलि भि होन्दा छा, पर कविता जब भाषा से जुड़िक ऐथर बढ़ि, त वाँमा रंगत हि कुछ हौर ऐगि। आज वु दौर च जख गढ़वाळि मा भाषा आन्दोलनै सैरि जवाबदरि कविता निभौणीं च। कविता का जरिया भाषा आन्दोलनौ यो दौर अब्बि बि जारी च। गढवाळि समग्र साहित्य का समीक्षक भीष्म कुकरेती वर्तमान दौर थैं गढ़वाळि कविता को स्वर्णकाल माणदा।

कविता का जरिया भाषा आन्दोलन मा कविता अबारी बड़ि हत्यार बणीं च। मंच वळि कविता। जणगूर बोलदन कि मंचीय कविता जख फैदाबन्द च तखि मंचीय कविता कि अपणिं सीमा भी छन।

या बात कव्यूँ मा जोश भर सकदि। गढ़वाळि कविता का मंच पर एक खास बात देखणम् जरूर औन्दि कि गढ़वाळि कविता का मंच पर जादातर अच्छि कविता पढ़े जान्दन। हालांकि मंच कि या कमजोरी भी च कि बाजिदाँ मंच पर कमजोर कविता कि तारीफ ह्वे जान्द अर अच्छि कविता सुणदरौं का पल्ला नि पोड़दि। गढ़वाळि भाषा आन्दोलन का ये दौर मा कतगै कव्यूँन मंच बटी अपणिं खास पच्छ्यांण बणांइ अर कतगै नया कवि कविता मा अपणिं पच्छ्यांण बणौंणां छन। कुछ अपड़ि कवितौं कि फंचि लेकि तैयार बैठ्याँ छन। लोकप्रिय कविता का ये दोर मा कव्यूंकि भीड़ मा इना भी कवि मिल जान्दन, जौंन औरि त छोड़ा पर अब्बि तक छपीं गढ़वाळि कव्यूंकि क्वी किताब पढ़ि त फुण्ड फूका, देखि तक नी।

ये भाषा आन्दोलन का दौर मा मंच का द्वी कवि सब्बु का प्रिय बणगेनि। यु द्वी कवि मंच पर अपणि खास जगा बणौंदा। यूँ कव्यूँ मा मुरली दीवान अर जगदम्बा चमोला का नौं ल्हिए सकेन्दन। या यूँ कव्यूँकि अपणि काबलियत च कि ये पूरा लेख मा मि केवल यूँ द्वी कव्यूँ का नौं ल्हेणैं हिम्मत कर सकणूँ छौं। ये लेख मा केवल लोकभाषा आन्दोलन मा कविता कि भूमिका कि बात तक सीमित रखण चाँणू छौं, किलैकि कविता अपणां आप मा बड़ु विषय च। बक्कि कव्यूंक मूल्यांकन अर ये दौर कि कविता को जिक्र मि अपणां कै हैंका आलेख मा कन्नै कोशिश कल्लु।

जणगूर बोलदन अर बतौन्दन कि असल अर देखण वलि बात या भी होलि कि ये भाषा आन्दोलन से ऐथर बढ़्याँ अर ऐथर बढ़दरा कवि गढ़वाळि भाषा का साहित्य मा अपड़ि कतगा जगा बणैं सकदा। वूँकि नजर मा साहित्य का देखणन नया दौर मा यो भाषा आन्दोलन अब कवितौं से ऐथर कुछ हौर भी देखण चांणो च। भाषा गोष्ठी, संवाद, चर्चा, समीक्षा, गीत जनि विध भी चाणीं छन कि गढ़वाळि मा कविता से बात ऐथर बढ़ु त वू भि अपणि धमक दिखाउन। देखा तब!

❑❑

गढ़वाळि कविता अर मंच

मेरु अपणु आंकलन छ कि कै बी लोकभाषा मा सबसे जादा कविता का लिख्वार गढ़वाळि मा छन। सबसे जादा कवि सम्मेलन बि गढ़वाळि मा होणा छन। येकि शुरुवात अस्सी का दसक मा लोकेश नवानी जी न करी छै। ये से पैलि यन नी च कि गढ़वाळि कविता लिखेणी नि छै। भौत सुंदर कविताओं की रचना ये से पैलि बि होणी छै। गढ़वाळि भाषा का पढ़दरा यूं कवितों तैं बांचणा बि छा। आकाशवाणी को नजीबाबाद केन्द्र खुलण से बि गढ़वाळी कविता लिखण की कई लोगु मा रुचि जागी। बी० मोहन नेगी जी न गढ़वाळि कविता का पोस्टर बणैन अर जख-तख प्रदर्शनी लगैन। अपणि कविता को पोस्टर देखी तैं बि कविता लिखणै कि इच्छा कवियों मा जागि। एक दसक बिटि रुद्रप्रयाग मा ओमप्रकाश सेमवाल जी न कलश संस्था का माध्यम से गढ़वाळि कविता गौं-गौं तक पौंछोणो तैं ढाई सौ से जादा कवि सम्मेलन गढ़वाळि मा अबि तक करिन अर कई नयां कवि अर कवयित्रियों तैं मंच दीनि। गढ़वाळि कवि सम्मेलन से सुणदारों की संख्या का दगड़ा गढ़वाळि कविता लिख्वारु की एक लम्बी लंगत्यार तैयार ह्वेगि।

आज तलक पढ़दारों को बाटु न्याळण वळि गढ़वाळि कविता अब सुणदारा अर देखदारों का बीच कवि सम्मेलन का मंचों न नयु फैलार दीनि। गीत, गजल अर छिटगों का रूप मा बानि-बानि कि अंद्वार मा सुणदारों की चेतना तैं छ रुझौणी, भिजौणी अर कविता मंच का माध्यम से नया मुहावरा च रचणी। मंच की कविता का सुणदारा अर छपीं कविता का पढ़दारा अलग-अलग ह्वे सकदा। मंच की कविता मा कवि या कवयित्री की प्रस्तुति बि महत्वपूर्ण होंदि। अपणा भाव या शिल्प तैं बोलणो लहजा अर हाव-भाव बि कविता का सौंदर्य तैं बढे देंदा। यु जरूरी नी छ कि जो कविता मंच बिटि सुणणा छन वो पढ़ण मा बि वथी भलि लगु।

मि कविता का इतिहास मा नि जाण चांदू। ये पर भौत कुछ लिख्यूं छ। मि गढ़वाळि की आज की कविता पर बात करणूं छौं। वर्ष 2012 मा मदन मोहन डुकलाण जी अर गिरीश सुंदरियाल जी न 'अंग्वाळ' नौं से एक कविता संकलन प्रकाशित करि। ये संकलन मा 235 कवियों की

रमाकान्त बेंजवाल

जन्म : 4 अक्टूबर, 1962
कृतियां : गढ़वाल दर्शन-1997, मध्य हिमालय में नंदादेवी के उत्सव एवं जात परंपरा-नंदा राजजात 2000 (संपादन), गढ़वाल हिमालय- 2002 एवं लोकभाषा गढ़वाळि में गढ़वाळि हिंदी शब्दकोश (संपादन)-2007, गढ़वाळि भाषा की शब्द संपदा-2010 में प्रकाशित।
सम्प्रति : राजभवन पुस्तकालय उत्तराखण्ड, देहरादून
सम्पर्क : 35-बी, लेन-1, फेज-2, पंडितवाड़ी, देहरादून
मो० : 09412915471

रचना प्रकाशित छन। लगभग सौ कवि यन छन जु अबि नईं छ्वाळी का छन अर ये संकलन मा नि छन। कवि सम्मेलन का बाद एक दसक बिटि सोशल मीडिया औण से गढ़वाळि कविता का लिख्वारु की एक नईं बिज्वाड़ जामि। फेसबुक, वाट्सअप, यूट्यूब, ट्वीटर से घर-घर तक गढ़वाळि कविता पौंछण लगी। अपणि भाषा से लोगों को मोह जागी। लोग लिखणा छन पढ़दरा पढ़णा छन अर सुणदारा सुणना छन।

आज गढ़वाळि साहित्य बांचण से जो कवि या गीतकार बणिन वूं मा नरेन्द्र सिंह नेगी जी, नेत्र सिंह असवाल, लोकेश नवानी, वीरेन्द्र पंवार, नरेन्द्र कठैत, बीना बेंजवाल, मदन मोहन डुकलाण, गिरीश सुंदरियाल, निरंजन सुयाल, गणेका खुगशाल गणी, महेन्द्र ध्यानी, देवेन्द्र जोशी, डॉ० जगदम्बा कोटनाला, मधुसूदन थपलियाल, डॉ० प्रीतम अपछ्यांण, नीता कुकरेती, विमल नेगी आदि प्रमुख छन। निसंदेह यूंकि कविता की धार पैनी छ। किलै कि यूं सबि लिख्वारों न गढ़वाळि भाषा पढ़ी, समझी अर फिर लिखि।

कवि सम्मेलन से जु कवि हमारा बीच परिचित ह्वेन वूं मा ललित केशवान जी, ओम प्रकाश सेमवाल, जगदम्बा चमोला, मुरली दीवान, तोताराम ढौंडियाल जिज्ञासु, संदीप रावत, जयपाल सिंह रावत 'छिपड़ुदा', ओम बधाणी, देवेन्द्र उनियाल, महेन्द्र ध्यानी, शांति प्रकाश जिज्ञासु, उमा भट्ट, बीना कंडारी, हरीश जुयाल कुटज, हेमवती नंदन भट्ट हेमू, धनेका कोठारी, धर्मेन्द्र नेगी, सुशील पोखरियाल, मोहन वशिष्ठ आदि प्रमुख छन। यूं कवियों पर मंच की छवि अर श्रोताओं की ताळ्यों को असर जादा दिखेंद। श्रोताओं का अनुसार यि कवि अपणि कविता तैं ढाळ्दा अर भौत सुंदर लिखणा छन।

अब बात मोबाइल कवियों की। पिछला 5-6 वर्ष बिटि सोसियल मीडिया-फेसबुक, वाट्सअप, यूट्यूब पर गढ़वाळि का कई नयां लिख्वार हमारा सामणि ऐन। इंटरनेट पर गढ़वाळि भाषा की बात हो तो सबुसे पैलि आदरणीय भीष्म कुकरेती जी को नौं प्रमुख च। सोशल मीडिया का दगड़ा ब्लॉग अर समीक्षा खूब लिखिन अर लिखणा छन। यूं से प्रेरणा ले तैं कई कवियों न सोसियल मीडिया पर लिखण सुरु करि। जगमोहन सिंह जयाड़ा, राजेश्वर उनियाल, पयास पोखड़ा, सुनील थपलियाल घंजीर, नंदन सिंह राणा, देवेश आदमी, वीरेन्द्र जुयाल, प्रेमलता सजवाण, मधुरवादिनी तिवारी, कविता भट्ट, अनिता काला, उपासना सेमवाल, सुधीर बर्त्वाल कुछ नों यन छन जोंकु परिचय सोशल मीडिया से ह्वे। कई कवि यन बि छन जो हिंदी का दगड़ा गढ़वाळि मा बि लिखणा छन। वूंकि सूची लंबी छ। गढ़वाळि कवियों की बिज्वाड़ बूतण मा तीन संस्थाओं को नौं प्रमुख च। पैलि संस्था धाद, दुसरी चिट्ठी-पत्री अर तिसरि कलश। ओम बधाणी जी जो बि कवि सम्मेलन होणा छन वूं कविताओं की वीडियोग्राफी करी तैं यूट्यूब पर डाळणा छन। सराहनीय कार्य च अर यूं कविताओं की रिकार्डिंग दुनिया मा अपणि भाषा तैं प्रेम करण का लोग पैणे पकोड़ि समझी देखणा बि छन।

कविता को सीधु सम्बन्ध जिकुड़ि से होंद। कविता वो होंदि जो गद्य से जल्दी जिकुड़ि पर छपछपि लगांदि। अपणि भावनौं खुणि पढ़दारों या सुणदारों तक पौंछोणे क्षमता कवि मा हो त वे कवि को वो भाव पक्ष मजबूत माणे जांद। कवि अपणा भावों तैं सीधा-सीधा या प्रतीकात्मक रूप से कविता मा रंचद। तै भाव मा शब्दों को चयन, रस, छंद, अलंकार से परिपूर्ण होंन त वीं कविता को कला पक्ष बढ़िया माणे जांद। बेशक गढ़वाळि की नई कविता पुराणा रोंदेड़ा-खुदेड़ा कु मोह त्यागी नया भाव पक्ष, नया मूल्य अर नया शिल्प विधान का दगड़ा हमारा सामणी छ। नयां-नयां विषय पर अपणि बात रखणो ढब, अपणा लोक जीवन की विषय वस्तु अर प्रतीकों पर नया बिंबों का दगड़ा निसंदेह हमारि कविता अगनै बढ़णी छ।

कविता गद्य से जल्दी याद ह्वे जांदि। कविता रचण खुणि जरूरि नी छ आपन भौत पढ़ि हो त आप भलि कविता लिखि सकदा। पर यो बि जरूरी छ कि आप जो लिखणा छन क्या वो कविता बि छ कि ना। जो भाव अर शिल्प आप लिखणा छन कैऽकि नकल त नि छन करणा। हमारा गौं मा रामलीला या नाटक होंदा छा त बीच-बीच मा स्वांग बि लोगु को मनोरंजन करदा छया। लोग खूब हैंसदा छा। ताळी बजोंदा छा। पर यि स्वांग कबि बि रामलीला को हिस्सा नि माणे जांद छा। कई कवि यन बि छन जौंन श्रोताओं का खिगताट अर ताळ्यूं का ततड़ाट देखी अपणी मूल धारा बदल दीनि। फेसबुक, वाट्सअप अर यूट्यूब पर लाइक अर व्यू से कविता को मूल्यांकन नि ह्वे सकद। कविताओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी औण बि जरूरी छन। आज गढ़वाळि मंच की कवितों मा कथगै कठमाळि शब्द बि कविता मा जगा पौण बैठिन। यु ध्यान रखण पड़लू कि सुणदारा की ताळ्यों सूणी लिख्वार अफ्वी मा मगन ह्वे कदमताल करण तलक ही सीमित नि ह्वे जौन। कवि सम्मेलन खूब होणा छन पर कविताओं पर बहस अर परिचर्चा नि होणी।

❑❑

गढ़वाळि कविता : अजकालै मेस

डॉ० प्रीतम अपछ्यांण

गढ़वाळि कवितै उमर साढ़े तीन सौ बरस पार ह्वेगे। यूं बरसूं मा कविता कै हौड़ूं फर्कि, कै अन्वार दिखैगे अर बदलौ का बंडि बाटों हिटग्ये। समाज, परिवार, रीत भांत, खटि कमै का ब्वाना बदलेणा रैनि ता दगड़ै दगड़ा कविता का मिजाज अर भौंण बि बदलेणी रये। सौ साल पुराणि अर आजै कवितौं मा यूं फरकूं तैं साफ-साफ देख्यै सकेंद। न केवल कथ्य बल्कन भाषा अर कविता का उद्देश्य-कारण तक बदल्यां दिखेंदन। अजक्यालै गढ़वाळि कवितै अन्वार अर मेस का जणचारेक प्वैंट इख मा दिखौणै कोशिश छ।

1. भाषा

गढ़वाळि कवितै अजकालै भाषा 'हिन्दी' का जादा नजीक दिखेंद। जण्या-मण्या कवि ललित केशवान जी अपणि मुखाभेंट मा ये फर इशारो कर्दन कि अब हमारा परसर्ग अर विभक्ति हिन्दी जन हूंदी जाणी छ। पहाड़ै (पहाड़ कि), मनाऽ तरजु (मन का तरजू), यखा (यख का), बरडल्यै (बरडलि की), तरौं (तरौं कि) जना प्रयोगुं मा साफ दिखेंद कि परसर्ग हिन्द्या औण बैठ गिन। कवितै मात्रौं गैण्न मा यान् भले हि असानि ह्वेजांद हो पर गढ़वाळी का 'स्वनिम' अर 'मुरका' कम होणा छन।

इन्नि क्रियापदूं भाषा बि बदलीं दिखेंद। पुराणि गढ़वाळि मा रहण, चाहण, कहण कु प्रयोग जादा छौ पर अब सरल अर शॉर्टकट रौण, चाण, बोन जना शब्दूं प्रचलन बढणू छ। या मेस गढ़वाळि गद्य मा बि इन्नि बदलौ दिखौणी छ। गद्यै भाषा बि 'हिन्दीटाइज्ड' हूंदि जाणी छ।

2. छंद

गढ़वाळि कविता मा छंदू का मामला मा क्रांतिकारी बदलौ दिखेंदन। पुराणा संस्कृता छंदूं वळि कवितान् हिन्द्यौ मुक्तछंद, अरबी गजल छंद, जपानि हायकु जना छंद अपणै कि कमाल कि रचना उपजैनि। औंलो हे माँ सौंण मू मी हक्क की छुट्टि ल्हीक (मंदाक्रांता), केदारूं मा रै बरफ यो टुप्प हळंकार ल्हेकी, उनि चुल्ला मा लाळु चुवाणि च वा (घनाक्षरी), जना

जन्म : 14 जुलाई, 1974
प्रकाशन : चकोर, उमर बुणदि जा (गढ़वाळि काव्य) मेरी रचना, ध्वनियों के शिखर (हिन्दी काव्य)
लोकसाहित्य मा पी.एच.डी.
सम्प्रति : अध्यापन
सम्पर्क : बी०आर०सी० नारायणबगड़, चमोली
मो० : 9412924354

पुराणा छंद अबै कवितौं मा कम दिखेणा छन। चौपाई कु प्रयोग जादातर अनुवाद वळि कवितौं मा हुयूं छ। दोहा का कुछ जबरदस्त प्रयोग वर्तमान मा दिखेंदन। जन कि—फिर होली नौनि त सूण ब्यटा, कर दियां कोखी खालि। ब्वारि हमारी बर्ची चयेणी, नात्युं कि आस त रालि (नरेन्द्र सिंह नेगी), मी तेरी तू मेरि कर, सीबीआई जाँच। भित्र त हम द्वी मौस्यरा, कतै नि आली आँच (प्री०अ०)।

गजल विधा मा स्तरीय रचनौं कु सृजन वर्तमान गढ़वाळि कवितै उपलब्धि मने सकेंद। वारा न्यारा कैर गे/त्यारा म्यारा कैर गे। एक ही मनख्यात मा/काळा ग्वारा कैर गे (जगमोहन बिष्ट), मिठा मनतता घाम म् पीठ तपाणी रै/ये बाना खल्याणम् आणि जाणी रै। चुड़ापट्टि को घाम अर कुंगळो सरेल/फूक मारि मारी घाम स्यळाणी रै (पयास पोखड़ा), मधुसूदन थपलियाल (हरबि हरबि) जना कतगै कवि गजलूं कु कमाल दिखौणा छन। सतीश रावत, जगमोहन जयाड़ा जी द्वी-तीन ल्हैनै छ्वटि कवितौं का भला सल्लि छन।

गजल विधा मा स्तरीय रचनौं कु सृजन वर्तमान गढ़वाळि कवितै उपलब्धि मने सकेंद। वारा न्यारा कैर गे/त्यारा म्यारा कैर गे। एक ही मनख्यात मा/काळा ग्वारा कैर गे (जगमोहन बिष्ट), मिठा मनतता घाम म् पीठ तपाणी रै/ये बाना खल्याणम् आणि जाणी रै। चुड़ापट्टि को घाम अर कुंगळो सरेल/फूक मारि मारी घाम स्यळाणी रै (पयास पोखड़ा), मधुसूदन थपलियाल (हरबि हरबि) जना कतगै कवि गजलूं कु कमाल दिखौणा छन।

सतीश रावत, जगमोहन जयाड़ा जी द्वी-तीन ल्हैनै छ्वटि कवितौं का भला सल्लि छन। यूं कि कविता शास्त्रीय हायकु चै हो न हो, पण धारदार जरूर छन।

3. कथणि

अजकालै गढ़वाळि कवितौं को कथ्य पैलि से भौत फैलार कु अर पैनो छ। गढ़वाळा सौंदर्य अर डांडा कांठौं पर कविता पैलि बि लिखे गिन पण आजै कवितौं मा भावुक प्रशंसा का दगड़ करुड़ु यथार्थ बि कवितौं मा फौंर्यूं रौंद। बाजि बाजि दां त सौंदर्य तैं औळणा बि सुणण पड़दन, व्यंग्य बि झेलण पड़दा अर अपणो होयां तैं साबित बि करण पोड़द। अबै कवितौं मा सिरप बद्री-केदारै जै-जैकार नी छ बल्कि 'सिरोबगड़ (ओम प्रकाश सेमवाल)' पैलि हि खड़ा ह्वे जांदा। यखा संसाधनों कि लूट खसोट अर जनतै लचारि बि कवितौं मा अयीं छ। हौर्युं खुणि लगै होला तिन अमरित का धारा/भाग मा हमारा ऐनि त्यारा ढुंगा गारा (महेश तिवाड़ी), फजितु बिजां छ कि मि वूंकि किस्मतौ रोयूं/जु सुखै भकल्वण्यूं मा डांडि कांठ्यूं छोड़ि गैन (हेमू भट्ट) जनि कविता प्रकृति अर मनख्यूं का दुंद उभारद। अजकालै रचनौं मा प्रकृत्यौ स्वतंत्र चित्रण बि मिलद। या हिन्दी छायावादौ असर ह्वे सकद।

4. उद्देश्य

पैल्यै कवितौं को मूल कारण मयळा मनौ उमाळ अपणि दुदबोलि मा खतणौ छौ। अपणा गढ़वाळ अर वे कि भाषा का प्रति अपण्यास हि मूल कारण छौ। ये कारण तैं आजै कविता भौत हळ्का मि नि ल्हेणी छ। आजै कवितौ अधार बोली कि जगा 'गढ़वाळि भाषा' ह्वेगे। गढ़वाळै सब्बि उपबोल्यूं का शब्द कविता मा औण बैठ्या अर अपणा मिजाज का दगड़ा भाषै अभिव्यंजना शक्ति बढ़ौणा छन। गढ़वाळि कवितौं कु प्रकाशन बढण से भाषा का प्रति गंभीरता कु भौ उभरणू छ। गीतकाव्य मा० नरेन्द्र सिंह नेगी, गिरीश सुन्दरियाल, देवेश जोशी, ओम बधाणी, सतीश कालेश्वरी जी कि रचना साफ उद्देश्य ल्हेकि सामणा औंद।

इनु बि नी छ कि गढ़वाळि कवितौं मा अजकाल सब भलि हि होउन। देवेन्द्र जोशी का प्रतीक, गिरीश सुन्द्रियाल का बिंब, मुरली दीवान कु कथापन, हरीश जुयाल कुटज का पैना व्यंग्य, उपासना सेमवाल कि महिला अभिव्यक्ति, बीना बेंजवाल कु संदेश सामयिक कविता मा उत्कृष्ट दिखेंद। भौत सारा पुराणा कवि बि पता नी 'टैम पास' वळि कविता जिलै ल्यखणा होला? ये फर पूरु विश्लेशण ह्वे सकद पर या बि वर्तमान कवितै मेस छ।

❑❑

गढ़वाळि कवितों का माध्यम अर आज का समय कि चुनौति

डॉ० नंद किशोर हटवाल

वर्तमान मा हम अगर गढ़वाळि कविताओं का माध्यम की बात करों त हम देखदा कि द्वी माध्यम हमार सामणी पर महत्वपूर्ण तरीका से गढ़िवाळि कवितों तें श्रोताओं अर पाठकों तक पौंछाणा छन। यी द्वी माध्यम छन प्रिंट अर मंच। यद्यपि प्रिंट माध्यम के भी भाषा का साहित्य कू महत्वपूर्ण माध्यम ह्वंद लेकिन गढ़वाळि कवितों का आज का संदर्भ मा मंच को माध्यम भी काफी महत्वपूर्ण रूप मा हमारा सामणी पर च। संभवतया आज से पैली कवितौं का वास्ता मंच को प्रयोग यति अधिक मात्रा मा नि ह्वंद रै ह्वोलो।

गढ़वाळि कविताओं का संदर्भ मा देखा त प्रिंट की तुलना मा मंच को माध्यम कवितों तें बेहद कारगर तरीका से श्रोताओं तक पोंछोंण को काम कनो छ। कै मेला मा आयोजित कविसम्मेलन मा बारह-पन्द्रह कवियों कि कविता भौत सहजता से हजार-पांच सौ लोगों तक सीधा-सीधा पौंछी जांदी। यी कविता अपणा सम्पूर्ण अर्थ अर प्रभाव तें अपणा दगड़ा लिजे तें श्रोताओं तक पौंछदी। अगर हम प्रिंट माध्यम से तुलना करों त हम ब्वोलि सकदां कि प्रिंट की तुलना मा मंच का माध्यम से कै बि कविता को प्रभाव कयि गुणा बढ़ी तैं श्रोताओं तक पोंछंद या ब्वोलि सकदा कि वर्तमान समय मा मंच गढ़वाळि कवितों तैं प्रभावशाली ढ़ंग से श्रोताओं तक पोंछोण को काम करणो छ। वर्तमान मा प्रिंट का माध्यम से गढ़वाळि कवितों को पाठकों तक पोंछण कि तुलना मा मंच को माध्यम भौत आगिने बढ़ी तें काम करणो छ।

अगर हम नयी पीढ़ी की बात करों त तनारा भित्तर गढ़वालि कविता कू कबि क्वी बि अंश गयी ह्वोलू त वेको माध्यम मंच ही रै होलो। अर नयी पीढ़ी ही किलै हम यी बात आम आदमि का बारा मा बि ब्वोलि सकदा। असल मा गढ़वाळि कवितों तैं पत्रिका-संग्रहों मा पढ़ण कि अभी वे प्रकार कि संस्कृति को विकास नि ह्वे। येको एक महत्वपूर्ण कारण यो बि छ कि गढ़वाळि लिखण-पढ़ण का बजाय अबि बोल-चाल मा ज्यादा प्रयुक्त होणी छ, अबि गढ़वाळि मा लिखण-पढ़ण संस्कृति को विकास नि ह्वे सकि। गढ़वाळि कवितों तें लोकप्रियता दिलौंण मा बि मंच को महत्वपूर्ण

जन्म : ग्राम तपोंण, पो० लंगसी, चमोली-गढ़वाल.

कृतियां : उत्तराखण्ड हिमालय के चांचडी गीत एवं नृत्य, चमत्कार (बाल कहानी).

सम्प्रति : माध्यमिक शिक्षा विभाग मा कार्यरत.

हाथ छ। अगर आज लोग गढ़वाळि कवितों कि बात कना छ, गढ़वाळि कवितों का बारा मा जाणना, गढ़वाळि कवितों मा रुचि दिखोंणा त ये को सारू श्रेय मंच ही तैं जांद। मंच को माध्यम हौर बि कारगर ह्वे सकंद बस जरूरत छ रुद्रप्रयाग की कलश संस्था अर ओमप्रकाश सेमवाल का जन कुछ हौर जुनूनी प्रयासों कि।

यां का अलावा ह्वाट्सएप, फेसबुक, इण्टरनेट, यूट्यूब जन नया माध्यम बि गढ़वाळि कवितों तैं अच्छा शूट कना। यन नया माध्यमों मा बि गढ़वाळि कविता अच्छी फबणी। बस जरूरत च यन माध्यमों का द्वारा गढ़वाळि कवितों तें परोसण का श्रीनगर मा पाण्डवाज अर अगस्तमुनि बटी सामुदायिक रेडियो जन प्रभावशाली प्रयासों कि। ये प्रकार का और बि प्रयास करण की वर्तमान मा जरूरत छ। भावि य का माध्यम यी ही छन। यी माध्यम नयि पीढ़ि का बीच गढ़वाळि कवितों तैं पोंछोण अर लोकप्रियता दिलोंण मा कारगर ह्वे सकदन। ये का हममू प्रमण बि चा। जगदम्बा चमोला अर मुरली दिवान की कुछ कविता आज बि ह्टसऐप पर वाइरल छन। ह्वट्सऐप का माध्यम से न जाने कितना लाख श्रोताओं तक यी कविता पौंछि होली।

गढ़वाळि कवितौं का माध्यम की वर्तमान स्थिति कवियों का सामणी एक जबरदस्त चुनौति खड़ी भी करदी। यी चुनौति च कवितों का स्तर अर विषयों कि। असल मा मंच को संबंध मनोरंजन से ज्यादा जुड़द। चाहे स्यो मेला को मंच ह्वो या शुद्ध रूप से आयोजित कविसम्मेलनो को मंच ह्वो। कवितों को प्रयोग सिर्फ मनोरंजन का वास्ता न रै जो, गढ़वाळि कविता सिर्फ मानोरंजन कू माध्यम न बणी जो, गढ़वाळि कविता चुटकुलाबाजी, जुमलाबाजी को पर्याय न बणी जो, यी मंच का माध्यम कि बड़ी चुनौति च। मंच स्वाभाविक रूप से कवियों पर मनोरंजन कू दबाव बणौद। कविता अर गीत को अंतर बण्यू रौण चैंद। असल मा मंच का माध्यम से प्रस्तुत कविता मा कवितों की अंतर्वस्तु, विषय अर कवितों का वर्तमान मानदण्डों से जादा कवितों की प्रस्तुति अर गायन पक्ष प्रभावशाली भूमिका मा ऐ जांद। हमारी चुनौति या बि छ मंच का माध्यम से प्रस्तुत कवितों मा कविता बर्ची रो। सि निखालिस मनोरंजक गीत बणी तैं न रे जो।

विषयवस्तु का स्तर पर बि हमतें अपडेट ह्वायूं चैणो छ। हमारी कविता प्रेम, खुद, झरना, ठण्डों पाणी, हिंवाली कांठी, फूल, मोल्यार, बसंत, ऋतु, परदेश जन परम्परागत विषयों से अगिने बढ़ते हुए आज का संदर्भों से भी जुड़ू। स्थानीय का दगड़ा राष्ट्रीय अर अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ बि हमारी कवितों मा औं। हमारी गढ़वाळि कविता बि संवेदनाओं को विस्तार करते हुए एक बड़ा भूभाग का सरोकार समेटूं। स्थानीय का दगड़ा राष्ट्रीय अर अन्तर्राष्ट्रीय चिंता बि हमारी कविताओं का विषय बणू।

हमारा आज का समय की चुनौति छा कि हमारी गढ़वाळि कविताओं मा जनपक्ष मजबूत तरीका से औं। जनसरोकार मजबूत तरीका से दिख्यो। नास्टेल्जिया से भैर ओंण कि जरूरत छ। छायावाद प्रेम अर प्रकृति वर्णन से आगिने हमारी आज कि कविता जन समस्याओं तें मजबूत तरीका से उठो। अगर हास्य कविता लिखणा च त वे मा ब्यंग्य की धार बि ह्वो। वर्तमान राजनैतिक विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार, दुष्प्रवृत्तियों पर ब्यंग्य।

गढ़वाळि कविताओं कि आवाज सिर्फ मिठी अर मयालू ही ना हो बल्कि भ्रष्टाचार का खिलाफ लोगों तैं जगोंण वालि ताकतबर आवाज बि बणो। निकम्मापन अर धड़ाबाजी कि राजनीति का खिलाफ 'एक जुट एक मुट्ठ' को आह्वान गढ़वाळि कविताओं का केन्द्र मा दिख्यो। एकदम वर्तमान सरोकारों से जुड़न भि जरूरी छ। पर्यावरण, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पलायन, अंधविश्वास, जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता का खिलाफ गढ़वाळि कविता एक मजबूत आवाज बणी कै उभरू, एक मजबूत हथियार का रूप मा प्रयुक्त ह्वो।

विषय अर माध्यम का दगड़ा नयी उपमा, अलंकार योजना, नयां रूपक, मुहावरों को प्रयोग भी जरूरी छ। भाषा का स्तर पर बि नया प्रयोगों कि जरूरत छ। नयी काब्य की प्रवृत्तियों अर मूल्यों कि झलक गढ़वाळि कवितों मा बि दिख्यो।

यी गढ़वाळि कवितौं अर कवियों का सामणी आज का समय, समाज अर माध्यमों कि चैनौति छ। जो हमतें स्वीकार करी चैंणी नतर हमारी कविता भौत जल्दी मनोरंजन को माध्यम भर बणी कें रै जाली। हम समय का तेज प्रवाह दगड़ा नि दौड़ला त कखि मा छाला पर बैठि तें घाम तापणा रौला।

❑❑

आज का गढ़वाळि कवि

बोलदन कि साहित्य मा समाज की अन्वार दिखेंद अर अछे की हम अपणि कथौं मा, कवितौं मा, गीतु मा अपणा समाज तैं देख सकदौं वेतैं पच्छ्याण सकदौं, समाज का अपणा टैम की स्थिति परिस्थित्यूं की जाणकारी साहित्य से मिलि सकद यी ना बलकन अपणो इतिहास अर गढ़वाळि गीत कवितौं मा त अपणा भूगोल की जाणकारी बि मिलद।

इख हम गढ़वाळि कविता पर बात करणा छौं त गढ़वाळि कविता कि तीन सौ साठ-पैंसठ साल की जात्रा मा हम देखदो कि गढ़वाळि कविता को यो बगत अपणा सुमार पर छ कविता का इतना लेखदरा पैलि कवि नि छा, रै बि होला त दिखे नि छन, छपे नि छन, सुणे नि छन, यान हम बोल सकदौ कि अबि तक कि गढ़वाळि कविता जात्रा मा यो बगत गढ़वाळि कविता को सबसे बिगरैलो, बगत छ ह्वे सकद अगनै को टैम यां से अच्छु हो पर ये टैम पर जब गढ़वाळि लोकभाषा तैं अगनै बढ़ौणै बात होणी, यीं भाषा तैं आठवीं अनुसूची मा शामिल करणै बात होणी, यीं भाषा मा पाठ्यक्रम शुरू करणै बात होणी, लोकभाषा तैं रुजगार से जोणणै बात होणी त यो सफर भाषा का वास्ता, यीं भाषा बोलदरों का वास्ता, यीं भाषा का काम करण वळौ का वास्ता सबसे अच्छो बगत छ।

य बात वि महत्वपूर्ण छ कि उत्तराखण्ड मा जथगा बि लोकभाषा छन चा वो कुमाउंनी हो, जौनसारी हो, रंग हो, रवांल्टी हो, रोंग्पा हो यों सब्यूं मा सबसे जादा काम गढ़वाळि मा होणो छ अर हां यो बि सच छ कि साहित्य कि तमाम विधौं मा बिटि सबसे जादा कविता ही लिखेणी छन यान कविता लिख्वारु कि बि कमि नि छ अर यीं भाषा की बड़ी उपलब्धि छ अर भाषा की वृद्धि का वास्ता जरूरी बि।

अपणि लोकभाषा का वास्ता काम करण वळा लोग अर विशेष रूप से कविता करण वळा ह्वे सकद अपणि शुरुवात कविता का क्षेत्र मा शौकिया ह्वे कि करदा होउन पर जरा-जरा कै वो भाषा सल्लि लिख्वार अर भाषा का वास्ता धाकना धैरी काम करण लग जांदन, गढ़वाळि भाषा की श्रीवृद्धि करण वळा लोग इबारि विशेष रूप से सोशल मीडिया को उपयोग

ओम प्रकाश सेमवाल

जन्म : 10 नवम्बर, 1965

कृतियां : मेरी पूफू, ढुंगळा (कहानी संग्रह), कल़सुरी (भजन-गीत), दिवरा बन्यात, मैते सम्ळौंण, जै माँ हरियाली, जै-जै तुंगनाथ (गायन)

सम्प्रति : रा०इ०का० रतूड़ा मा भौतिक विज्ञान का प्रवक्ता. 'कलश' संस्था का माध्यम से लोकभाषा आन्दोलन मा सक्रिय.

अपणि भाषा का वास्ता करणा छन। यां से एक फायदा यो ह्वे कि जो लिख्वार छा तौं तैं अपणो हुनर दिखौणौ मंच मिलिगे अर यो एक यनो मंच छ जख बिटि लोग पूरि देश अर दुन्या मा अफुतैं अपणि भाषा तैं अर अपणि लेखन कि विधा तैं पौछौणा छन। लेखन कि दुन्या मा कति लोग सोशल मीडिया बिटि ही शुरुआत करणा छन तौन अपणि कविता फेसबुक, ह्वत्सएप, यूट्यूब ट्विटर अर ब्लॉग पर डाळि जतना लाइक अर कमेंट पैनि वां से प्रोत्साहित ह्वेकि वो लिख्वार ह्वेगेनि।

ये टैम पर संस्कृति विभाग, भाषा संस्थान की मदद से बि भौत लिख्वारु कि किताबि छपेनि यो काम वि अपणां आप मा बड़ो काम छ य बात बि सै छ कि सबि अच्छो नि औणौ होलो पर य बात बि इथगै सै छ कि सबि खराब बि नि औणौ होलो अर सबसे खास बात य कि साहित्य संकलित होणो छ अर वेंका दस्तावेज तैयार होणा छन यां कि छाळछांट त वक्त अर अगनै औण वळा विद्वान करि ल्हेला पर जरूरी छ कि पैलि छपे त जौ।

गढ़वळि कविता कि बात करौं त इनबि नी छ कि गढ़वळि कविता सिरफ गढ़वाळ मा हि लिखेणी हो गढ़वाळि कविता गढ़वाल बिटि सात समन्दर पार तक लिखेणी छ, धाद इबारि गढ़वाळि कविता पर केन्द्रित अंक को प्रकाशन करणी छ। ये अंक मा हम अपणा समै का कव्यूं तैं बि दर्ज करणा छौं अर य कव्यूं क्वी अंतिम सूची नी छ यां कि वि गुंजैश छ कि हम अपणि लोकभाषा गढ़वाळि का कति कव्यूं तक नि पौछि सका हूला पर कोशिश छ कि जो कवि पढ़े छन दिखे छन, छपे छन, सुणे छन जौं तक पौछि सकौ तौतैं हम शामिल करणा छौं अर और जाणाकार्यूं अर सूचनौं अर नामौ का वास्ता आप सब कि सौ सला कि जग्वाळ मा बि।

- **पौड़ी :** सर्व श्री नरेन्द्र सिंह नेगी, गणेश खुगशाल गणी, वीरेन्द्र पंवार, मनोज रावत 'अंजुल', विमल नेगी, नरेन्द्र कठैत, जगमोहन बिष्ट, हरीश जुयाल कुटज, गिरीश सुन्दरियाल, नन्दकिशोर ढौंडियाल, धर्मेन्द्र नेगी, जगदीश बहुगुणा, उम्मेद सिंह नेगी, महेशानन्द गौड़, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (जे०पी०), योगेश पांथरी, बी० मोहन नेगी, रेखा, अनुसूया प्रसाद उपाध्याय, सैन सिंह रावत, जगदीश बिजल्वाण, महावीर प्रसाद बडोला, मोहन लाल ढौंडियाल, दर्शन सिंह बिष्ट, यतेन्द्र गौड़, डॉ० नरेन्द्र गौनियाल, विश्वप्रकाश बौड़ाई, महेन्द्र ध्यानी, शिवदयाल शैलज, डॉ० जगदम्बा प्रसाद कोटनाला, सुशील पोखरियाल, आशीष बलूनी (आशी), विनोद रावत, अद्वेत बहुगुणा, वीरेन्द्र खंकरियाल, गिरीश पंत मृणाल, बीना कण्डारी, यशोधर डबराल, सुखदेव दर्द, दिनेश कुकरेती, सुनील दत्त मैंदोला, संजय सुन्दरियाल, आशीष सुन्दरियाल, विद्यादत्त शर्मा, चित्र सिंह कण्डारी, डॉ० ख्यात सिंह चौहान, राजेन्द्र प्रसाद कोटनाला, बच्ची राम बौड़ाई, कैलाश बहुखण्डी, चन्दन (प्रेमी), प्रेमबल्लभ गोदियाल, कुलवीर सिंह रावत 'छिलबट्ट', शकुन्तला ईष्टवाल, महेशानन्द, सुशील चन्द्र, अशोक उनियाल 'अज्ञ', रणवीर दत्त शास्त्री, संजय ढौंडियाल, अनिल कुमार सैलानी, दिनेश कुमार सोनी, जयन्ती प्रसाद बौड़ाई, मीना पंवार, बलवन्त सिंह नेगी, साधो सिंह नेगी, प्रियव्रत रावत, शैलेन्द्र झिल्डियाल, उर्मिला चमोली, उमेश चन्द्र सिंह रावत, सुशील बुड़ाकोटी, मुकेश बड़थ्वाल 'प्रतिबिम्ब', लीलानन्द रतूड़ी, शैलेन्द्र भण्डारी, मनोज घिल्डियाल, अनूप रावत, विजय गौड़, उद्धव भट्ट, डॉ० गणेश मणी त्रिपाठी, चण्डी प्रसाद बंगवाल, गणेश वीरान, त्रिभुवन उनियाल, दीपक रावत, विमल मंमगई, पायल उनियाल, अनुसूया प्रसाद डंगवाल, विमल बहुगुणा।
- **देहरादून :** लोकेश नवानी, देवेन्द्र जोशी, बीना बेंजवाल, मदन मोहन डुकलान, चारु चन्द्र चन्दोला, सुमित्रा जुगलाण, मोहन वशिष्ठ, कान्ता डंगवाल घिल्डियाल, बीणापाणि जोशी, डॉ० नन्द किशोर हटवाल, नीता कुकरेती, तोताराम ढौंडियाल 'जिज्ञासु', सुनील ढौंडियाल, शान्ति प्रकाश जिज्ञासु, निरंजन सुयाल, डॉ० दिनेश चमोला, डॉ० उमेश चमोला, शूरवीर सिंह रावत, शशिभूषण मैठाणी, अमरदेव बहुगुणा, जय प्रकाश पंवार, डॉ० लक्ष्मी भट्ट, जगदम्बा प्रसाद नौटियाल, प्रेमलता सजवाण, धीरेन्द्र ध्यानी, हेमचन्द्र सकलानी, वीरेन्द्र डंगवाल पार्थ, प्रेमबल्लभ पुरोहित राही, गोकुलानन्द किमोठी, उमा भट्ट, मोहन वशिष्ठ, सुमित्रा जुगरान, डॉ० आशा रावत, सिद्धी लाल विद्यार्थी, कालिका प्रसाद नवानी, बृजमोहन शर्मा वेदवाल, डॉ० सुनील कैंथोला, कुलानन्द घनशाला, सुरेन्द्र पुण्डीर, विजय मधुर।
- **श्रीनगर :** देवेन्द्र उनियाल, जयकृष्ण पैन्यूली, संदीप रावत, सुबोध हटवाल, दिलवर रावत, अनिता काला, उमा घिल्डियाल, डॉ० कविता भट्ट, राजीव कगड़ियाल,

भगवान प्रसाद घिल्डियाल, राधा मैन्दोली माधवी, देवेश्वर प्रसाद खण्डूड़ी, आरती पुण्डीर,सरिता चन्दोला, मोहित नेगी, सुशील गैरोला, सुभाष पाण्डे, प्रियंका नेगी, साहिनी उनियाल, शिव सिंह नेगी।

- **दिल्ली :** ललित केशवान, नेत्र सिंह असवाल, संजय पाल, जयपाल सिंह रावत 'छिपडु दा', दिनेश ध्यानी, पृथ्वी सिंह केदारखण्डी, दर्शन सिंह रावत, जगमोहन सिंह जयड़ा, वीर सिंह राणा, अतुल सती, पयास पोखड़ा, सुमन गौड़, गोविन्दराम पोखरियाल, अशोक सेमवाल सुबोध, सुनील थपलियाल 'घंजीर', अतुल गुसांई, श्रीमती सुनीता शर्मा, चन्द्रमोहन ज्योति, कुंज बिहारी मुण्डेपी कलजुगी, डॉ० सतीश कालेश्वरी, रमेश हितैषी, रमेश घिल्डियाल, सुरेन्द्र सिंह रावत, लक्ष्मीपाल, वशुन्धरा नेगी लाजो, सुनिता नादान, ब्रह्मानन्द बिंजोला, बृज मोहन शर्मा, जबर सिंह कैंतुरा, मोहन लाल ढौंडियाल, वीरेंद्र जुयाल, अनूप रावत, सुनील मैंदोला।
- **रुद्रप्रयाग :** जगदम्बा चमोला, ओमप्रकाश सेमवाल, सुधीर बर्त्वाल, बृजमोहन सजवाण, अनूप नेगी, डॉ० शैलेन्द्र मैठाणी, अजय नौटियाल, अश्विनी गौड़, गोविन्द पंवार, नितीश भण्डारी, सचिन रावत, सतपाल कुमार, उपासना सेमवाल, रीना रावत, रचना सती, विक्रम कर्पवाण, कविता भट्ट, जगदीप बिष्ट, मनमोहन भट्ट, नीरज रावत, आशीष वशिष्ठ, सुरेश गैरोला, संजय भट्ट, गिरीश बेंजवाल, कुसुम भट्ट, शैलेन्द्र बर्त्वाल, नन्दन राणा, अरूण चमोली, डॉ० नीता नौटियाल, गीता बुघाना, नीता भण्डारी, अजय गुसांई, बलवीर सिंह राणा अडिग, ओमप्रकाश चमोला, संदीप वशिष्ठ, अनुसूया रूड़ियाल, अनिल नेगी, महेन्द्र बर्त्वाल, मदन भारती, पायल उनियाल, राकेश झिंक्वाण, मोहन प्रकाश, विधिका सेमवाल।
- **चमोली :** मुरली दीवान, तेजपाल निर्मोही, जय विशाल गढ़देशी, नयन कोठियाल, बृजेश रावत, निखिल फर्सवाण, नीरज कण्डारी, प्रभाकर किमोठी, पम्मी नवल पवित्रा, ज्योत्सना जोशी, सुशील राज, संगीता बहुगुणा, लक्ष्मी प्रसाद मलगुड़ी, शशि देवली, भगवान सिंह रावत, शिवराज सिंह रावत 'निशंग', गुणानन्द थपलियाल, प्रीतम अपच्छयाण, धन सिंह राणा, नवीन डिमरी बादल, महेन्द्र सिंह राणा, अजय चौधरी, बीरा फर्सवाण, मंगला कोठियाल।
- **उत्तरकाशी :** नागेन्द्र जगूड़ी नीलाम्बर, ओम बधाणी, डॉ० मीना नेगी, डॉ० महावीर रवांल्टा, सुन्दरलाल नौटियाल, रमेश कुड़ियाल, राजेश जोशी।
- **टिहरी :** डॉ० सत्यानन्द बडोनी, शशिभूषण बडोनी, जब्बर सिंह कैंतुरा, भगत सिंह भण्डारी, विजय सिंह बुटोला, सुरेश स्नेही, विपिन पंवार, लोकेश नेगी, डॉ० वीरेन्द्र बर्त्वाल, प्रभात सेमवाल, अरविन्द प्रकृतिप्रेमी, विक्रम विक्की, मनोज शाह, डॉ० सुरेन्द्र दत्त जोशी, सुनील डंगवाल, नरेन्द्र गुंजन, हरीश बडोनी, रामप्रसाद गैरोला, सेवानन्द पाण्डे, सतीश बलोधी, गजेन्द्र नौटियाल, सुलोचना परमार, लक्ष्मी प्रसाद पैन्यूली, दिनेश बिजल्वाण, डॉ० यशोदा प्रसाद सेमल्टी, चक्रपाणि श्रीयाल, मुकेश उनियाल, अंजली नौटियाल।
- **हरिद्वार :** मधुसूदन थपलियाल, संजय नेगी सजल, मलखीत रौथाण
- **ऋषिकेश :** हेमवती नन्दन भट्ट 'हेमू', धनेश कोठारी, नरेन्द्र रयाल, सतेन्द्र सिंह चौहान सोशल।
- **लखनऊ :** नित्यानंद मैठाणी, हरीश बडोला
- **मुम्बई :** डॉ० राजेश्वर उनियाल, भीष्म कुकरेती, गिरीश बन्दूणी, राकेश पुण्डीर, कुसुमलता, विनोद डबराल, सत्य प्रकाश कुकरेती।
- **पंजाब :** सुशील बुड़ाकोटी 'शैलांचली', मृत्युंज्ज पोखरियाल, विजेन्द्र दगड्या।
- **चण्डीगढ़ :** दीन दयाल सुन्दियाल शैलज, बलवन्त सिंह रावत कविराज, घनानन्द चमोली।
- **गुजरात :** गीतेश सिंह नेगी।
- **विदेशु मा :** पराशर गौड़ (कनाडा), डॉ० मनीष सेमवाल (जकार्ता), प्रभात सेमवाल (जापान)।

गढ़वाळि कविता मा लेखणौं काम अजकाल भौत बढ़िया होणों छ। देश अर दुनिया मा गढ़वाळि कविता रंचेणी। हम जौं कव्यूं तैं यख शामिल करि सकौं य गढ़वाळि कविता लेखदरा कव्यूं कि अंतिम सूचि नीछ भौत सारा कव्यूं तक हम नि पौंछि सका हूंला हमारा पढ़दरा बि अगनै हमारा कव्यूं कि जाणकरि हम तक पौंछौंणै कोशिश करला।

❑❑

सुनकार मा आखरो उदंकार च कविता

बीना बेंजवाल

जन्म : 17 नवंबर, 1969 (देवशाल)
कृतियां : मुटठी भर बर्फ, कमेड़ा आखर.गढ़वाली-हिन्दी शब्दकोश.
सम्प्रति : केन्द्रीय विद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल
मो० : 9458343964.

भाषा दगड़ी कवि को बोल-व्यवहार, बात-बिचार च कविता। दुन्या से जादा अफ्फु तैं जाणण-बींगणो मौका देंदि कविता। बाळों का बाळपन ऊँकि दुदभाती अर निंदिबाळी रख्वाळी करदि कविता। दाना-दुख्यारों कि लाठी-छतरी साज-संभाळ, ऊँका खाँसी-खँकारो सो-सब्द सुणौंदि कविता। बीठा-पाखों घास काटणी पहाड़े नारी सक्या कि जूड़ी बौटी, सेळ्वा लप्पन रड़दा पहाड़ थामणो सांसो जगौंदि कविता। सैणी-सपाट, उदासिली जिंदगी तैं उंचि-निसि डांडि-कांठ्यों कि रौंत्यळी सैर करौंदि कविता। राजकाजे अबेंडी चाल तैं झरझरी कण्डाळी झपाग लगै भलिके हिटण सिखौंदि कविता। कुनेथ का बरमण्ड मा दुमुख्या लाल झझकारताळा धरी अक्कला ताळा खोळदि कविता। बाटु बिरड़्याँ मनख्यूतैं अदरेणा झुलड़ों माढर्की-त्वर्पी ब्वे तलक पौंछे वींकि जिकुड़ी मा बळणी तप कि अखण्ड जोते जात करौंदि कविता। कब्बि चुल्ला थड़कणा भाते थुब्क-थुब्क सुणौंदि त् कब्बि 'झोड़-सांगळ किरथु राणा, उट्ठापूतो भैर चोर बुलाणा' कि भौण पर यकुलापराण तैं आखर-आखर हिकमते स्यांरु लाठी पकड़ै चोर-चकड़ैतों कि मन साका सल्ल सल्यौंदि कविता।

पलायन कि यीं घनाघोर रड़दि-झड़दि बार मा बि जु संवेदना मटखाणा माटा अर बोलि-भाषे पठळखाणा आखर्वी सजिली ढुंगी-डळ्यूँन चिणणी हो डंड्याळी-तिबार, लीपणी हो सुनकार पड़णा गौं-गुठ्यार! बिजाळणी हो खाळ-धार! जख एकतरफां पुंगड़्यों पौजीं फसल अर बुग्याळों चरणी उम्मीदों पर पड़णी हो ढांडे निठूर मार, हैकि तरफां होणी हो घोषणा कि तुमारि बस्त्यूँ बिटि जाणी सड़क अब नि रे राजमार्ग! कविता घ्वीड़ों का चांठा, घट-मरुड़्यों का पुराणा बाटा-घाटा बचौणो बणौणी च अपणान या हाइवे। पहाड़े संवेदना बचौणी या गढ़वाळि कविता आज हमतैं सैरि धरति से बि च जोड़णी। आज न स्या घोट्या लगार्यीं पाटि रे अर न सु बोळख्या पर आँख्यों मा छप्याँ तौं कमेड़ा आखर्वी हिट्वाक आजे कविता पिछनै छूट्याँ

जंदरा, सिलोटा, उरख्यळा, पळेंथरों कि हरचणी भौण-बाच सुणै हमारि जिकुड़्यों का ढक्याँ द्वार-मोर च भिचोळणी। पैलि अंठ मारैंद छै, आज लिखीं-छपीं अंद्वार मा मंचों पर बिराजमान ह्वे पढ़दरों-सुणदरों का मन को सोद-भेद लगै ऊँकि चेतनामा च घरबैसु कनी।प्रवास्यूँ किडेळ्यूँ पौंछीगाड-गदन्यूँ का सुंस्याट, बथौं का सरसराट, म्वार्यों का रुमणाट से बुरांस-फ्यूँली का खिगताट कि नौबत बजै ठेठ कंकरीटे कौलोन्यूँ मा प्रकृति पर्व च मनौणी गढ़वाळि कविता। रूड़ बीदा द्यो भैजी बरात मा न्यूती हैं सारोळ्या झमझम बरखदा बसग्याळ च रुझौणी। छोड़्याँ गौं बाड़ी-सग्वाड़्यों सुदि वौंगणा रूखा-सूखा मुंगर्यौटो ंम्येटी अपणा मंचो का व्यनायक च बणौणी। देबतों का ठौ तलक बस्याँ अपणागौं-गौळों कि सूचना ठेठ अपणा मयळ्दु मिजाज मा च देणी।

मजाल जु कविता अलावा क्वी हौर विधा करि सकु यु कमाल! जुटै सकु यु सूरोसांसु! ये ढब पर करि सकु जमाना दगड़ी छ्वीं-बत्थ। बिंगै सकु बिकासे मनचैंदि सारतार। मंच पर जै तैं देखदरों-सुणदरों कि अगनै पंगत मा बैठ्याँ राजनेतो ंकि सामणि-सामणि पोल-पट्टी खोली मारि सकु सोटगि सपाक! लगै सकु कण्डाळी झपाग! पर सि फेर बि दाँत पिड़ो-सीं सुणणा रौ वन सब कुछ। चाखणा रौ वन अपणी पार्थी पकोड़्यू सवाद। या च कविते तागत। हौर क्वी विधा नि दिखै सकदि यन ऐना। इथगा भल्यार कन्न वळि कविता बिगर क्या नि पड़ण चौतिर्प सुनकार! जिंदगी का उदास-भमाण पाखों मौळ्यार च कविता। सुनकार मा आखरो उदंकार च कविता। अब अफ्वी सोचि सकेंद कि अगर कविता निहोलि त् क्या होलु।

❑❑

आँईर दादा!

• महावीर रवांल्टा

आँईर दादा!
तू डरै डर त
लड़ाई से कले डर?
आपु से डर
भीतरऽ कू डर मनखी खाई डो
बईर कू डर हौसला दे।
डरैं मनखी चलऽ
मीलों मील
डरैं आपस मा
बाँटी खा तिल।
(भगवान कू डर रदंलु)
आँईर दादा!
कथु कू डर?
डरैं करऽ मनखि उपात
उर डरैं मारऽ घोड़ू लात
डर तेई सब कुछ करा
जेइसे डरै डर रऽ।

❑❑

जौंकि कवितौंन मि कवि बणों

मदन मोहन डुकलान

जन्म : 21 सितम्बर, 1964
कृतियां : आंदि-जांदि सांस, अपणु ऐना अपणि अंद्वार (कविता)
सम्पादन : अंग्वाल, हुंगरा, ग्वथनी गौं बिटि अर चिट्ठी-पत्री।
सम्मान : उत्तराखण्ड संस्कृति सम्मान, दून श्री, गोविन्द चातक सम्मान, उत्तराखण्ड शोध संस्थान सम्मान, यूथ आइकॉन अवार्ड, यंग उत्तराखण्ड सिने अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (याद आलि टीरी
सम्प्रति : उपप्रबन्धक (मानव संसाधन) ओ.एन.जी.सी.

सन् 1979 मा दस पास कन्ना बाद पिताजी का ट्रांसफर होंण पर दिल्ली बिटे देहरादून पौंछुं। तब तक मी पता नि छौ कि गढ़वाळि मा कविता कथा बि लिखेणी छन। सन् 1980-81 का दौरान नजीबाबाद रेडियो स्टेशन बिटि गीत सुणण शुरू करि त बड़ो आनन्द आये। जीत सिंह नेगी जी को 'तू होली बीरा, अर शिव प्रसाद पोखरियाल जी को फ्यूलड़िया त्वे देखी अर जौं भयों की होणी होली जना गीत मेरा दिल दिमाग मा छपे गैन अर नरेन्द्र सिंह नेगी जी को गीत सर्या बसगाळ बूण मा गीतन गढ़वाळि जनान्यूं की खैरि पिड़ा मा जिन्दगी को जो चित्र खीचें वान मेरी जिकुड़ि माटी पलटे गे अर बाद मा यों लोगों दगड़ परिचै होणा बाद अर योंको मार्गदर्शन आज तक सिखणे लालसा बर्णी छ।?

गढ़वाळि साहित्य से सीधों सम्पर्क 1983-84 का वार-ध्वार लोकेश नवानी जी का दगड़ सम्पर्क मा आणा बाद ह्वे अर तब गढ़वाळि कविता दगड़ जाण-पछ्याण ह्वे। कन्हैयालाल डंडरियाल कि कीडू की ब्वे कविता ज्यू पर छपे गे। ब्वलिंद कीडू ब्वे साक्षात म्यारा सामणि बच्याणी हो। हमारो गढ़वाळ अर सत्यानरेणा कथा अद्भुत कविता छन, जौंको पाठ मिन कतनै दा कतनै लोगों का सामणि करे। यांका दगड़ै अबोध बन्धु बहुगुणा जी को तेरी मेरी छ जोड़ी, पड़ताल अर भूम्याळ जनो खण्ड काव्य से गढ़वाळि साहित्ये सामर्थ अर ताकत को पता चले। गिरधारी प्रसाद कंकाल जी की उमाळ अर प्रेमलाल भट्ट जी, भजन सिंह सिंह, भगवती चरण निर्मोही, सुदामा प्रसाद प्रेमी, विद्यावती डोभाल, श्रीयाळ जी रघुवीर सिंह रावत अयाळ जी बौळया जी जना कवियों तैं पढ़ना मौका मिले अर म्यारा भितर कविता बीज बुतेन बैठिगेन। यो मेरो सौभाग्य रै कि यो कवियों दगड़ मितैं मंच मिले।

शुरूआती कविता लेखन का दौरान नेत्र सिंह असवाल, पूरण चन्द्र पथिक, विनोद उनियाल, लोकेश नवानी, ललित केशवान जी, जयपाल सिंह रावत, देवेन्द्र प्रसाद जोशी, जना कवि अर नरेन्द्र सिंह नेगी, शिव

प्रसाद पोखरियाल, जीत सिंह नेगी जना वरिष्ठ गीतकारूं दगड़ कवि सम्मेलनों मा शिरकता करणा को मौका मिलदू रै। अर म्यारा भितर कविता बीजू तैं हवा पाणी मिलदी रै अर वेका बीज औंगरण बैठि गेनि। यो औंगर्या कुपळों की थवांस अळोसण पळोसणमा अबोध बन्धु बहुगुणा जी को भौत बड़ो हाथ रै।

ये दौरान नेत्र सिंह असवाल कि एक ढांगा से साक्षात्कार कविता संग्रै छपे। वूंका यो कवितौंन भौत प्रभातिव करे। वून पारम्परिक कविता से हटिके गढ़वाळि कविता तैं एक नैं मुहावरा दे अर गढ़वाळि कविता मा जागृति को आधुनिक अर समसमायिक सामाजिक चेतना को संचार करे। वखि अबोध जी कि सौ सलाह अर कविता की बौद्धिक तार्किक अर समालोचनात्मक टिप्पणी मेरी कल्पना शक्ति का द्वार मोर ख्वलना रैन अर मेरी कविता कि बिज्वाड़ दुपत्ती होण बैठिगे।

गिरीश सुन्दरियाल एक इनो नाम छ जो मेरी कविता को सास प्राण छ वेका गीतों को गुमणाट म्यारा मन सदान गुजणूं रैंद। अर हरीश जुयाल कुटज की कवितौं को खिकताट त आशीष सुन्दरियाल कि कवितौं को झमझ्याट बि मितै ऐसास करोणो रैंद कि मि ज्यूंदो छौ अर म्यारो जिकुड़ाक धकध्याट कनो छ। मि अफु तैं अज्यूं कवि त कते नि मनदो अबि मि कविता ल्यखण पढ़ण सिखणू छौं। मि अपणा पुराणा अग्रज ल्यख्वार कवियों से बि अर अपणा समकालीन अर नै छ्वाळी का युवा कवि दगड्यों से बि सिखणू छौं। कविता ल्यखणो सबसे कठिन काम छ। मेरी कविता अज्यों बि भौत काची छन अर कतगै दा मि स्वचदो कि मिन क्या गढ़ी, क्या स्वाच, तिन क्या पढ़ी क्या बांच।

वे बग्त गढ़वाळि का दगड़ा दगड़ि मि देहरादूण का नामचीन कवि साहित्यकारों का सम्पर्क मा बि रौं स्व0 अवधेश कुमार, स्व0 हरजीत सिंह, नवीन नैथानी, राजेश सकलानी, विजय गौड़, सुभाष पन्त, गुरूदीप खुराना, डॉ0 जितेन ठाकुर, स्व0 ओम प्रकाश बाल्मिकी जना कतनै लोग रोज मिलदा छा। चकराता रोड़ पर टिपटाप रेस्टोरेन्ट हमारो बैठणा को अड्डा छ जख खूब बहस अर बिचार होन्दा छा। यो लोगों का प्रताप राजेन्द्र यादव, त्रिलोचन शास्त्री, कमलेश्वर, से०रा० यात्री, यश मालवीय जना कतनै देश का हिन्दीका जण्या मण्या साहित्यकारों दगड़ मुखाभेंट होंद छै। यो बैठकों न मेरी कवितै क्यारी खूब नळै-ग्वडै करे। अर म्यारा समकालीन कवि दगड्योंन मेरी कवितौं तै हारू भारो रखण मा बड़ो दगड़ों निभै। यों मा निरंजन सुयाल, देवेन्द्र जोशी, गणेश खुगशाल गणी, विरेन्द्र पंवार, संदीप रावत, शान्ती प्रसाद जिज्ञासू, बीना कण्डारी, बीना बेंजवाल, मधुसूदन थपलियाल, ओम बधाणी, हेमवती नन्दन भट्ट हेमू, जना सशक्त कवि छन त कलश का माध्यम से ओमप्रकाश सेमवाल को योगदान अर दिल्ली मा दिनेश ध्यानी जना कवित छन जौन अपणी भाषा का खारित कवि सम्मेलन अर कार्यक्रम उर्यै कि भाषा आन्दोलन का झण्डा बरदार छन त देहरादूण मा धाद अर चिट्ठी जनि संस्था बि लगातार अपणि म्याळाग मिरोणी छन जो निरन्तर मंच प्रदान करदी त मेरी कविता फलण-फूलण रैंद।

गिरीश सुन्दरियाल एक इनो नाम छ जो मेरी कविता को सास प्राण छ वेका गीतों को गुमणाट म्यारा मन सदान गुजणूं रैंद। अर हरीश जुयाल कुटज की कवितौं को खिकताट त आशीष सुन्दरियाल कि कवितौं को झमझ्याट बि मितै ऐसास करोणो रैंद कि मि ज्यूंदो छौ अर म्यारो जिकुड़ाक धकध्याट कनो छ। मि अफु तैं अज्यूं कवि त कते नि मनदो अबि मि कविता ल्यखण पढ़ण सिखणू छौं। मि अपणा पुराणा अग्रज ल्यख्वार कवियों से बि अर अपणा समकालीन अर नै छ्वाळी का युवा कवि दगड्यों से बि सिखणू छौं। कविता ल्यखणो सबसे कठिन काम छ। मेरी कविता अज्यों बि भौत काची छन अर कतगै दा मि स्वचदो कि मिन क्या गढ़ी, क्या स्वाच, तिन क्या पढ़ी क्या बांच।

❑❑

कविता मा लोक चेतना

गिरीश सुन्दरियाल

जन्म : 9 मई, 1969
कृतियाँ : मौल्यार (गीत संग्रह), अन्वार (कविता संग्रह), असगार अर कब खुललो रात (नाटक संग्रह)
सम्पर्क : ग्राम चुरेड़गांव, पत्रालय जगस्याखाल, बाया चौबट्टाखाल, पौड़ी गढ़वाल

वदन बल साहित्य समाज को ऐना छ याने समाज मा भलु-बुरू जो बि होंद वो हम तैं अपणा साहित्य मा दिखेंद। साहित्य की प्रसांगिकता बि तब्बि छ जब वेमा अपणा समाज की बक्त का दगड़ि बदलेंदी अन्द्वार दिखेणी रावु। वास्तौ मा साहित्य हमारा ब्याळि आज अर भोळ को ज्यूंदो-जगदु दस्तावेज छ। समै अर परिस्थितियूं का मुताबिक प्रत्येक भाषा का साहित्य मा बदलौ औणा रैनी अर औण ही चैणा छन्, ये विषय मा गढ़वाळि कविता भी कब्बि अलैदा नि रये। वा सदनि वक्त का दगड़ि हिटे, वीन अपणा समाज तै बर-बगत सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति दे। वेको मन हळ्ळो करे, वेकी खैरी बिसै।

गढ़वाळि कविता मा चेतना आजादी का बाद जादा मुखर ह्वेकी आये। किलैकि वांका बाद देशवास्यूं का समिणि अनेक चुनौती छयी उन्नि कविता खुणि भी कैइ चुनौती पैदा ह्वेनी जौंकू वीन डट कै मुकाबला करे। ये दौरान अर येका बाद गढवाळि कविता मा चेतना कतगै रूपों मा दिखेंद जनकि सामाजिक जन चेतना, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यवस्था का खिलाफ, राजनीतिक, पर्यावरणीय, शोषण का खिलाफ, जनसंघर्ष जनान्दोलन, (वन, भूमि, नशा विरोधी, राज्य आन्दोलन आदि)। ये तमाम लड़ै चेतना का द्वारा ही लड़ै गेनी। मातृभूमि का प्रति अगाध प्रेम गढ़वाळि कविता की मुख्य प्रवृत्ति रये। अनेकों गीत-कविता पौराणिक काल बटि आज तक रचे गेनी अर रचेणा छन्। राष्ट्रप्रेम अर मातृभूमि का प्रति समर्पण गढ़वाळि काव्य को मुख्य काव्य तत्व छ। जैका दर्शन हमतैं साक्यूं पैली 'गढ़वाळि' पत्र (1906) मा मथुरा प्रसाद नैथानी की कविता 'स्वदेश प्रेम' मा बि होंदन—

होलो को रूखो इनु नीच प्राणी
स्वदेश की जैन महिमा नि जाणी।
उमंग जैका चित मा नि आई
यी जन्म भूमि छ मेरी माई।।

यी राष्ट्रभावना सनातनानन्द सकलानी की कविता "सीख सच्चा सपूत कू" (1907) मा दिखेंद—

मातृभूमि छ सच्ची माँ, जन्म वीं से मिल्यूं छ त्वे
श्रद्धा रखदीं सदा वींकी, सेवा मा जो सपूत छै।

गढ़वाळि मा यीं चेतनाशक्ति की अनेकों कविता छन्। दगड़ी ही गढ़भूमि की वन्दना करदी, वींकी प्राकृतिक सुन्दरता, पौराणिक व सांस्कृतिक महिमा को बखान करदी खार्यूं कविता छन् जौंमा एक उदाहरण का रूप मा 1932 मा रचित सदानन्द जखमोला 'संतत' की 'गढ़गुणत्याळी' की कुछ पंक्ति दृष्टव्य छन–

नमो माता धाता सकल सुखदाता गढ़भुँई
छना ठंडा डाँडा जमुन अर गंगा बगणई।
नमामि केदारा तिरथ पति बद्री शुभगणई
धरे ह्यूँचुळी रजत की सि फूी लगणई।।

गढ़वाळ अर गढ़वाळियों की गौरव गाथा विश्वविख्यात छ। यखा वीर बांकुरो को समर्पण अर वीर भड़ु को पराक्रम को यशोगाान सरि दुनिया गांद। गढ़वाळ्यूं की वीरता को वर्णन भजन सिंह 'सिंह' को ओजस्वी भाषा मा कर्यूं छ–

पैलि गढ़वाळ त्वे कू नमस्कार छ,
तेरी हम पर दया दृष्टि अपार चा
पैलि उन्नीस सौ प्रंदा का लाभ मा,
जर्मनी फ्रांस का घोर संग्राम मा
फ्रांस की भूमि जो खून से लाल चा,
वख लिख्यूं खून से नाम गढ़वाळ चा।

गढ़वाळि कविता मा चेतना का स्वर वींकी पैलि प्रकाशित कविता याने सत्य शरण रतूड़ी की कविता 'उठा गढ़वालियों' (1905) मा स्पष्ट सुणेंदन।

यी कविता मा अपणि थाति अर जाति का उत्थान की भावना को वर्णन मिल्द–

अहो! तुम भैर त देखा, कभी से लोग जाग्या छन्,
जरा सी आँख त खोला, कगनो अब घाम चमक्यू चा।
पुराणा वीर, ऋषियों को भला वृतान्त को देखा
छयाई यूँ बड़ो की ही सभी सन्तान तुम भी ता।।

व्यवस्था का खिलाफ, अर हमारा गौं-मुलुक तै हर जगा तिराणौ अर बिराणौ सरकरि ढब को मुखर विरोध हमारी कविता मा छ। हमारी उपेक्षा को यर्थाथ वर्णन करदी महाकवि कन्हैया लाल डंडरियाल की कविता : द्यबरौं की रैली–

हम सदनि मुंडे ग्यवां,
जगु-जगु मा चुंडे ग्यंवा
मौ बणेनी स्याळुन
हम उबर ग्वटे ग्यवां।

इन्नि भाव जनवादी कवि नेत्र सिंह अस्वाल की चेतना मा भि उमळदिन–

हमारा चरि तरफ लगी रै आग
अर हम तैं सुणयेणा रै स्वाळा-भूड़ौ का गीत
ढुंगळा पकाणौ खिगचट
हम मुंडेणा रौं
अर हमारा कन्दूड़ू पुटग कुच्चयेणा रैं
शुद्ध हुणा मन्त्रर!

वक्खि वूंकी कविता 'म्यारा देशै तस्वीर' मा लूट, भ्रष्टाचार, शोषण को सटीक चित्रण छ त लमडेरू की मानसिकता व अळगसीपन को वर्णन बि छ।

कुछ लोग/कचम्वळि खै पेकी/जूँगा मलसणा छन्/
त कुछ/एक डौणे हडिकी बान/ह्यलारोळि मचाणा छन्/
अर बाजा-बाजा त/किराणि मा हि ब्यळम्या छन्/

गढ़वाळि कविता मा जनवाद का दगड़ा दगड़ी सर्वहारा वर्ग की धड्वै अर अभिजात्य वर्ग की खिंचे भी कतगै रचनौं मा दिखेंद। वक्खि समान अधिकारूं का झूठ की पोल बि खुल्दी दिखेंदी, सुरेन्द्र पाल का शब्दु मा–

गरीब जख्या-तखी
समानता अकड़ी छ दूर
स्वतंत्रता को
कितब्यू पुटग
मुख लुकयूं छ।

आज की रौंका-धौंकी की जिन्दगी मा सुख की खातिर मनिखी की खाणी-पीणी-सीणी हर्ची छ, झणि वो कैकी खोज मा भटकणू छ। यीं भटका-भटकी मा घड़ेक भी छिलम नी छ। येकी अन्वार चिन्मय सायर की यूं पक्त्यिूं मा दिखे सकेंद–

बेथ भर जिन्दगी
हाथ भर दुख
सुख लेकी बैठ्यूं छ
अपरू सि मुख।

अति आधुनिकता की अंधी दौड़ मा अपणि पछ्याण तै छ्वडणौं दुष्प्रभाव सायर की यी व्यंग्य कविता मा बि मिल्द—

हम/पैलि चुलेक/आज भँड्या सभ्य ह्वेग्यो/
पैलि हम/माटम लप्वडेंदा छयां/
अब हम!/समझिग्यो कि/
माटु हम पर लप्वड़ेग्या!

अनेकों अनेक विसंगतियों, त्रासदियूं अर विडम्बनौं का बावजूद भी पहाड़ पहाड़ छ। वे पर पूरी सक्या अर सामर्थ्य छ कि वो अपणि समणि खड़ि कै बि प्रकार की चुनौति को पुरजोर मुकाबला करद। या चेतना शक्ति मदन मोहन डुकलाण की 'पहाड़ सियूं नी' कविता मा दिखेंद—

पहाड़/छ्वपणू छ गरुड्वी डार/
द्वबणू छ रिक्खवा उड्यार/
त्वड़नू छ मनख्या बाघै दाड़/
पहाड़ सियूं नी छ।

हमारी साख्यूं पुराणि विरासतौं की बलि सिर्फ तथाकथित विकास का बाना दियेगे जो हमारा काम कब्बि नि ऐ। वो हमारी जिकुड़ि मा डाम सी धरेगे। यी संचेतना का दगड़ि सतीश बलोदी 'मर्द का बच्चौन' का जरिया अपिण अभिव्यक्ति करदन—

बळ्दु की जोड़ी सजदि छै/जै उखड़ा सेरा
डम्फर जोति दिनी वख/मर्द का बच्चौन।
जौं भीटा-पाखौं पर/घस्यरि बाजुबन्द लगांदी छै/
सिमट लिपी दिनी वख/मर्द का बच्चौन।

सरा गौं-मुलुक को नेतृत्व कन का सल्लि क्य कारनाम कना छन् य कै तैं बताणै जरूरत नी। राजनीतिक उठापटक पर बि गढ़वाळि कविता की चेतना चुप्प कबि नि रै। बगत-बरबगत वीन अपणि हुंकार भरे। इन्नि व्यंग्यात्मक पर यर्थात की कुछ पंक्ति गणेश खुगशाळ 'गणी' की—

अब घमतपा अर जुवरि ही दिखेणा छन चौछ्वड़ि
अब गिणती यूं की छ/अब बल सल्ली बि इ छन्/
अर जै देशो अग्वड़ि/इन्ना सल्लि होला/
वो देश!/कतगा पिछाड़ि होलू/तुम अफ्फी सोचि ल्या!

जब सर्या देशा यि हाल छन त उत्तराखण्डै त बात ही क्य कन। बल 'वे ख्वाल सबि उन्नि त ह्वाला मधुसूदन थपलियाल पट्ट भितरखण्डा हाल बताणा छन्—

छ्वीं ना कारो आज की सब भ्वाळ पर चल्णू छ।
भैजी मेरू मुल्क उधार-पगाळ पर चलणू छ।
पुटग्यूं-पुटग्यूं आग सैर गे आँख्यू-आँख्यू पाणि।

गढ़वाळ की धरती की सबसे बड़ी त्रासदी पलायन छ। पलायन विषयक असंख्य कविता गढ़वाळी मा लिखे गेनी, इन्नि आस व्यक्त करदी पलायन की सकारात्मक चेतना देवन्द्र प्रसाद जोशी का शब्दु मा—

यि उचा-उचा डांडा
जग्वळ्णा छन् अर
जग्वळ्णा राला
कि म्यारा कब्बि न कब्बि
जरूर आला।

सरकरि योजनों का नौ पर कन गंदराग्वळि मची छ, यीं धांधळी तै गढ़वळि कविता भौत भलि कै बिगांद। मोहन सैलानी की रचना। 'कैन खै' इन्नि एक चिर्दि लगांदी कविता छ—

मि एक बेजुबान लाटु पशु/
एक कनकटु बळ्द छौं
मी तै। सरकरि कागजों मा/द्वी दौ मरेगे/
न्याय की तलाश मा/
जनता की अदालत मा लगाणू छौं धै/कि पहाड़ मा/
विकास का नौ पर/
अयां रुप्या/कख समै/
ब्वाला/ब्वाला पंचो/म्यारा कन्दूड़ कैन-कैन खैं।

पहाड़ की जीवन धुरी छ नारी यान पहाड़ की कविता की धुरी बि नारी छ। यख नारी अर कविता अलग-अलग नि ह्वे सकदि। दिखे जाव त यि द्विया एक दुसरा का सम्पूरक छन्। यी बात तै बीना बेंजवाल की कविता आसानी से बिगांद—

जिन्दगी एक घट्ट छ/
अर जनानि/वे घट्ट सणि चलाण वळि।
पाणी की कूल

पहाड़ का सन्दर्भ मा यां से बेहतर उपमा नि दिये जा सकेंदी, वक्खि दुसरि तरफ जनानि को एक रूप ब्वे को छ, वा ब्वे ज्वा–

अफु खुणि पहाड़ जनि अंजड
हमकु ब्वगदि गंगाळ छ ब्वे
मयळि धरती की जौंळ्या बैण
सृष्टि रचण वळि किलकताळ छ ब्वे।

गढ़वाळ की धरती का कालजयी रचनाकार नरेन्द्र सिंह नेगी पहाड़ की नारी की परिश्रमी दिनचर्या को बखान भौत मार्मिक ढंग से करदन–

बिन्सरि बिटि धाण्यू मा लगीनी
सीणी–खाणी सब हरचीनी
सेंदी नि पै कबि बिजदी नि देखी
रतब्यणु सूरिज बि यूंनै बिजाी
यूं से बिधाता बि हारी–बेटी ब्वारी।

जनान्यूं की तरां ही एक आदिमै स्थिति भी भौत सोचनीय छ। मगर शशि भूषण की कविता की सलाह काबिलै गौर छ।

ब्यटा आदिम बण/बड़ो आदिम बण
पर आम आदिम नि बणि
किलैकि आम आदिम तै लोग चूसि दिंदन।

आदिम हर बड़ो आदिम बण्न खुणि सोच होण चैंद, य सोच हर कै मा नि होंदी कै–कै मा होंद। यी बात तै वीरेन्द्र पंवार की रचना आसानी से बिगांद–

स्वचणा बि अपणा कतगा तरीका छन्
क्वी मोरि कि बि अपणि सोच छोड़ जांद
क्वी स्वचदै–स्वचदा मोरि जांद।

यीं दुन्या मा सैणो गोर भ्याळ हकाण वळै की। हैंका तैका मा भूड़ा तळण कें की चल्दी कूल मा ढुंगू ध्वळण वळै की क्वी कमी नी। पर इनो की परख बि गढ़वाळि कविता की चेतना अंक्वेकि करद अर वूं से चितळो रैणा की धाद बि मरद। ये सन्दर्भ मा धर्मेन्द्र नेगी का व्यंग्य द्यखण लैक छन्–

पकयां चखुलौं तैं बि हवा मा उड़ै दिदन उडाण वळा
अर ढन्डि का माछौं तैं बि
डाळौं मा चढै दिदंन चढाण वळा,
रौतू का बळ्द मोरी बल अपड़ि खुशिन
हमारा त कर्या–धर्या मा मोळ–माटु
छोळि दिदन छ्वळण वळा।

विकास का नौ पर ठगयेदा गंवडया लोगु की खैरि की अभिव्यक्ति बि गढ़वाळि कविता की चेतना शक्ति को प्रमाण छ। जैं तै शिवदयाल शैलज भौत मजबूती से उठौंदन–

चुनौ बगत झप्प अंग्वाळ/जीतिकी सिरफ हाथ हलाणू रै
ल्हीजा हम्हरो अंग्वळा काटिकी/जख चयालु लगाणू रै
न बण्या सड़क न चल्या मोटर/तु ढुंगु चिप्टाणौ आणू रै।?

पर्यावरणीय संरक्षण, प्राकृतिक असंतुलन, प्रकृति का दगड़ी साहचर्य समेत प्रकृति विषयक अनेक कवितों की सृजना गढ़वाळि होयी छ अर होणी छ। प्रकृति का प्रति वो विशेष सजग छ महाकवि अबोध बन्धु बहुगुणा की चिन्ता अर चेतना द्याखा–

बुग्याळ कोणा पर/जखम बटि जंगळ शुरू होंद।
जड्डो का कुंगळा धाम मा पसरी हिरणी
अपणा कस्तूरा छौना तैं
दूदि नि पिलै सकणी/किलैकी/ये अतरा सी बेलम मा/
शिकारी वूं पर धैड़ गोळि मारि देलू।

इन्नि कतगै भावना, संवेदना चेतना गढ़वाळि कविता की कतगै रूपो मा छन। यखम मिन वींकी चेतना शक्ति की द्वी–चार उदाहरण मात्र दीनी। ल्यखदा–ल्यखदा मी तैं इन मैसूस ह्वे कि कविता चेतना छ अर चेतना कविता छ। गढ़वाळि कविता की नई चेतना की आस दगड़ी हरीश जुयाळ 'कुटज' दगड़ी वूंका विर्द भनाणू छौं–

स्वींणा सच्चा होला कबि/हिमालै हिंवाळ का
आँखी खोली बीजि जाला/बिर्द नया साल का
च्योलि धिते जालि जब/सर्ग स्वाणु बरखलो
भुणभुणी बिज्वाड़ नैळ/पाणि सर्र सरकलो

❑❑

किलै रंचे जौ कविता

नीता कुकरेती

कविता क्या छ - सवसे पैली मन मस्तिष्क मा प्रश्न औन्द कि कविता क्या छ। कविता का स्वरुप या प्रारुप का क्वी निश्चित पैरामीटर होन्दन, क्या को कविता बोलदन । ये विषय पर प्राचीन काल बटे अनेक साहित्यकारों न सारगर्भित तथ्यों का दगड़ी अपणी बात पुष्ट करी।

पण्डित जगन्नाथ बोलदन "रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्" अर्थात सुन्दर अर्थ प्रकट करणवळि रचना ही काव्य छ।

साहित्य दर्पण मा आचार्य विश्वनाथ बोलदन कि—"वाक्यम् रसात्मकं काव्यम्" यानि रस की अनुभूति करोणवळि रचना ही कविता छ। आचार्य श्रीपति का शब्दों मा—"शब्द अर्थ बिन दोष गुण, अहंकार रसवान ताको काव्य बखानिये, श्रीपति परम सुजान" संस्कृत का विद्वान आचार्य मामह्ह न बोले—"शब्दार्थौ सहितो काव्यम्" अर्थात कविता शब्द अर अर्थ को सुन्दर मेल छ।

आचार्य राम प्रसाद शुक्ल न कविता तैं जीवन की अनुभूति बताई।

कविता कवि की मन की भावना त होन्दी ही छ पर वांका साथ-साथ या युग धर्म को परिचय बि देन्द। कवि अपणी कविता का माध्यम से तत्कालीन समाज का सत्य को बि परिचय करान्द। कविता मा सत्य ,शिव अर सौन्दर्य की अलौकिक रसधार प्रवाहित होन्द। कविता मनखी तैं मनख्यात सिखांद, कविता मनख्यूं का मन मा प्रेम ,करुणा,दया,वीरता जना अनेक भाव प्रस्फूटित करण को माध्यम बि छ। मन की उथल पुथल तैं शब्द गुण, अलंकार, लययुक्त छंन्द, रस, चित्रात्मकता से व्यक्त करण की कला तैं कविता बोले जान्द। कविता मा चित्त तैं प्रसन्न करणवळु माधुर्य बि होन्द अर मन तैं उत्तेजित करणवळु गुण बि। कविता मन मा इन प्रभाव डाळदी जन सूखा लखड़ों पर आग भभकदी अर पाणी मा अपड़ों छैल दिखेन्द। वे समय जो अनुभूति होन्दी वा ही कविता छ। कविता अभिदा, लक्षणा अर व्यजंना तीनि तत्वों को आलम्बन लेकी पूर्णता प्राप्त करद। अभिदा शब्द शक्ति अर्थ को बोध करांदी त लक्षणां कै विशिष्ट अर्थ तैं प्रतीकों का माध्यम से विस्तार देन्द, ब्यंजना शब्द शक्ति से विश्लेषण अर अभिब्यंजना से कविता तैं पूर्णता मिलदी।

जन्म : 7 सितम्बर, 1952
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
सम्पर्क : 39/3, तेगबहादुर रोड
देहरादून
मो० : 9897504194

कविता का आदि कवि महर्षि वाल्मीकि मनै जंदन । प्रेमरत युगलक्रौच पक्षी तैं बहेलिया द्वारा बाण को भेद करण अर नर पक्षी को नि प्राण होण पर मादा पक्षी को आर्तनाद देखिकी महर्षि वाल्मीकि जी का हृदय मा करुणा अर दया का कारण स्वत् ही यो श्लोक मुख से निकल पड़ी।

मा निशाद प्रतिष्ठां त्वमगम:शाश्र्वती: समा:
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधी: काममोहितम्

अर्थात हे बहेलिया तिन कामरत अर मैथुनरत क्रौंच पक्षी मारी त्वे तैं कभी प्रतिष्ठा नि मिलो। ये का वास्ता ही वूंतैं आदि कवि मनै जांद। अर यो बि सत्य सबि जंणदन कि प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि न करी अर आदि कवि का रुप मा विश्व विख्यात ह्वेनी।

कविता की आवश्यकता या उपादेयता

आज का संदर्भ मा कबि-कबि प्रश्न औन्द कविता की जरुरत किलै छ , कविता क्या करद, समाज पर यां से क्या प्रभाव पोड़द। यो हमतैं मालूम होण चैंद चाहे इतिहास रै हो नी रै हो, विज्ञान की समझ बि रै हो नी रै हो पर कविता उबरी बि छै, अर रै होली किलैकि कविता ईश्वर न मनखी का मन मा संवेदना का रुप मा प्रत्यारोपित करी। ये वस्ता मनखी कै न कै रुप मा अपणा जिकुड़ी का उमाळ तैं ब्यक्त करणू रै। चाहे गीत रै होला चाहे अखाणा रै होला या पट का रुप मा अपणी बात बोली होलि, पर वा कविता ही छै।

कविता मन का मनोभाव तैं ब्यक्त करण को सुन्दर व सशक्त माध्यम छ। कविता समाज अर साहित्य को दर्पण छ। कवि लिख्वार जो कुछ समाज मा देखद या बताण चान्द वे तैं कविता का रुप मा समाज तैं लौटे देन्द। कविता इलै जरुरी छ किलैकि यां से समाज अर मनख्यूं तैं कई फैदा होन्दन—

1. कविता जख एक तरफ समाज को वास्तविक रुप दिखांद दूसरी तरफ अगर समस्या छ त वा समाधान को रस्ता बि बतांद। मतलब कविता मनखी तैं नैतिक दृष्टि से चरित्रवान बणाण को काम करद। समाज की विसंगति अर विद्रूपता तैं बतौणवळि कविता साहित्य को सशक्त माध्यम छ। कविता मा कम शब्दों मा गहरी बात बोले जै सकेंद। जन वीरेन्द्र पंवार की कविता बोलद " सबि धाणी देहरादून , होणी खाणी देहरादून " यूं पंगतियूंन देहादून मा जनता की बसागत को कारण अर पीड़ा दुयूं का दर्शन ह्वे जंदन। कविता कम शब्दों मा गहरी और विस्तृत बात बोलण को असरकारी साधन छ।
2. कविता गद्य की तुलना मा सरल सुबोध अर याद करण मा सुविधाजनक होन्द। जब कविता छंद युंक्त व गेय होन्दन त हमारा मन तैं अनुरंजित अर अहल्लादित करण का साथ-साथ विषय की ब्यापक जानकारी देण मा उंकी बड़ी भूमिका ह्वे जान्द। समाज का ज्वलंत विषयों पर जब कवि की कलम चलद त वेकू प्रभाव समाज पर गहरु पड़द। अनेक कवियों न पलायन पर अपणी कलम चलाई त सरकार को ध्यान बि ई समस्या की तरफ गै। ये तरह से चकबन्दी, चुनाव बेरोजगारी, आदि अनेक विषयों पर कवि अर लिख्वार कलम चलौणा छन , जैको प्रभाव समाज अर राजनीति पर पड़द दिखेणू छ।
3. कविता हमतैं कार्य करणै की प्रेरणा बि देन्द। कार्य द्वी बातों से प्रभावित अर सम्पादित होन्द-बुद्धि अर इच्छा या मनोभावना से। बुद्धि हमतै हानि लाभ का तराजू मा बैठेकि दुविधा उत्पन्न करै देन्दी, जबकि मन, इच्छा का वशीभूत फटाक से कार्य करणू तैं तैयार ह्वे जान्द। कविता हृदय बिटी बगदी गाड़ छ जो सुणदरों का मन तक चली जांद ये वस्ता कै बि कार्य करणै, कविता प्रेरक की भूमिका भौत खूबसूरती से निभांदं। कार्य करण का वास्ता मन मा वेग होण की आवश्यकता होन्द अर मन का वेग तैं सही रस्ता पर लिजाण वळी कविता ही होन्द । राष्ट्रीय आन्दोलन या उत्तराखण्ड आन्दोलनों मा जन गीतों की भागीदारी कै से छिपी नी छ यों गीतों न जनता तैं संघटित करी लक्ष्य तक पौंछौण मा अपड़ी सशक्त भूमिका निभाई। ये वास्ता जरुरी छ कवितों की रचना निरन्तर होणी रौ।
4. कविता मन मानस तैं मनोरंजन भी प्रदान करद। कविता साहित्य का दपर्ण का साथ-साथ समाज तैं मनोरंजन का साधन का रुप मा अपणी सशक्त उपस्थिति से परिचय सदियों से कराणी छ। कविता का द्वारा नौ रसों को रसास्वादन समाज तैं बरसों बिटि मिलणो ही छ। अधिकांश लोगों को मनण छ कि कविता को अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन छ ,पर या बात पूरी तरह से सही नी छ यद्यपि मनोरंजन कविता को प्रमुख गुण छ पर कविता मनोरंजन का साथ-साथ अनेक उद्देश्यों की पूर्ति बि करद। मनखी कविता पढ़ीकी, सुणिकी या लेखिकी आनन्द की अनुभूति करद वें मा एकाग्रता का गुण उपजी जांद ,सोचण

समझण की शक्ति बढ जांद। समाज का दायित्वों को बोध भी ह्वे जांद। सामान्य रूप से सब्योंन अनुभव करी होलो कि नीति अर धर्म सम्बन्धि उपदेश मन पर इतगा असर नी डळदन जतगा कविताओं का माध्यम से बोली जाण वळी बात। तुलसीदास रचित राम चरित मानस , सूरदास को सूरसागर केवल मनोरंजन देण वळा ग्रन्थ नि छन बल्कि मनोरंजन का साथ -साथ सामाजिक मर्यादा तैं कायम रखणवाळी कृति बि छन। ये मा भाई से भाई को कर्तब्य माता से पुत्र अर पुत्र से माता को क्या कर्तब्य होण चैन्द ,समाज तैं दिशा दिखौण को कार्य करुयूं छ। सूरसागर मा सगुण भक्ति से ईश्वर प्राप्ति को मार्ग दिखौणों को प्रयास करुयूं छ। जो स्पष्ट करद कि कविता मनोरजंन से भी अधिक प्रभाव समाज पर डळणी रै। आज से लगभग सात सौ साल पैली की रचनाओं को प्रभाव हम आज बि महसूस करी सकदां।

5. कविता भाषा से परिचय बि करांद अर संरक्षण बि करद। कविता हम तैं हमारी भाषा, संस्कृति अर साहित्य से परिचित करांद। आज हमारा भौत सारा शब्द प्रयोग मा नि होण का कारण विलुप्ति का कगार पर छन। कविता का माध्यम से कवि ,लिख्वार साहित्यकार इना शब्दों तैं समाज विशेषकर नई पीढ़ी का लिख्वारुं तै बतौण को काम करणी छ। एक तरह से कविता साहित्य, भाषा अर संस्कृति का संरक्षण को महत्वपूर्ण दायित्व निभौणि छ। गढ़वळि साहित्य की समृद्ध परम्परा छ अनेक गढ़वळि साहित्यकारों कवियों न जौन गद्य, पद्य, कहानी , नाटक अर उपन्यास का माध्यम से भाषा बचौण की कवायद करी, वूंको परिश्रम व्यर्थ नी जाऊ, ये का वास्ता निरन्तर लेखन की यात्रा प्रवाहित होण चैणी छ। आज कई लिख्वार अपणी पैनी कलम से हर विषय पर गढ़वळि मा लिखणा छन वूंका ये प्रयास से साहित्य की श्रीबृद्धि त होणी ही छ, साथ ही साथ भाषा की मानकीरण पर भी चिन्तन का वास्ता मार्ग प्रशस्त होलू। हमारा कई लब्धप्रतिष्ठित कवि साहित्यकार जौंन अपणी रचनाओं से समाज तैं प्रभावित करी और गढ़वळि भाषा तैं अगनै लिजाण का वास्ता अथक प्रयास करी। गढ़वळि की पैली कविता कैन लिखी होली प्रमाण का अभाव मा कुछ नी बोल्ये सकेंद पर हमारा लोक गीत जो साख्यूँ बटे समाज मा लोक पर्व अर ब्यो काजु मा बोल्यें जांदा छा वू भी कविता ही छै। गढ़वळि मा लिखित साहित्य को प्रारम्भ 1750 का आसपास ह्वे होलू इन अधिकाशं विद्वानों को मत छ।

6. संचार का साधन व कविता-आज लगभग 85 प्रतिशत भूभाग पर रेडियो अर शतप्रतिशत भूभाग पर दूरदर्शन को प्रभाव ह्वेगी। आज रेडियो अर दूरदर्शन समाज की चेतना तैं प्रभावित करणमा पूरी तरह से कामयाब छ। यामा समाचार, मनोरंजन अर विविध कार्यक्रमों का द्वारा समाज मा अच्छी बुरी सबि चीज परोसे जाणी छ। यूँ परिस्थितियों मा मन मा स्वाभाविक प्रश्न औन्द कि आज कविता की क्या आवश्यकता छ। कविता से समाज मा परिवर्तन सम्भव छ। कविता समाज तैं दिशा दे सकद यां पर चर्चा ह्वे सकद। आपन देखी होलू विज्ञापन हो या सीरियल कविता का माध्यम से वूंको परिचय दिये जांद अर वूँ तैं अधिक सशक्त अर प्रभावकारी बणौण मा कविता अर गीतों को सहारा लिए जांद। आज इलेक्ट्रोनिक मीडिया का प्रचार प्रसार से कविता को फलक विस्तृत ह्वेगी। कविता व्हटसअप अर फेसबुक का माध्यम से हर ब्यक्ति का पास पौछणी छ। कई कवि यूं साधनों का कारण ही अपणी पछाण बणाण मा सफल होणा छन। दूर संचार का साधनों की व्यापकता का कारण आज कविता समाज की दशा व दिशा तैं प्रभावित करणवळि सशक्त माध्यम बणिगै।

अन्त मा यो बोले सकेंद कि कविता आदिकाल से चली औणवळि साहित्य की वा विधा छै जैंको प्रार्दुभाव सबसे पैली ह्वे होलू। निश्चित ही कालखण्ड मा जनी जनी परिवर्तन ऐ होलू तनि तनि वींन रूप बि बदली होलू। प्रारम्भ मा लोकगीत का रूप मा सामाजिक चेतना अर लोक पर्व की आवश्यकता तैं परिपूर्ण करना का वास्ता उपजी होली। आज कविता खण्डकाव्य महाकाव्य की यात्रा करी की हाइकू छिटगा लघु कविता, गद्य कविता आदि का रूप मा अपणी यात्रा अनवरत रुप से करणी छ। कविता को भविष्य उज्ज्वल छ। समाज का वास्ता कविता आवश्यक छ किलैकि ईमा मन तैं ढांढस देण की कला बि छ अर फटगार मनण की क्षमता बि।

❑❑

निरंजन सुयाळ

अक्कल

वन भै! अन्न सभी छन खाणा
पर अक्कल क्वी-क्वी छन पाणा
यखमा अन्नौ दोष कतै नी
औणा नी बस होस ठिकाणा
ये सौकारी तंतर-मंतर
बै-खातौं का जोङ-घटाणा
हासिल पाए शून्य बताए
बे-अक्कल बर्मण्ड रिटाणा
अक्कल की रे! छाया-माया
कागजु मा क्वी हौळ लगाणा
अन्नैदाणि मवास्यूं खाणी
अब हथगुळिमा 'जौ' उपजाणा
कछड्यूंमा हो बैस सदानी
अन्न छक्वै छ किलै घबराणा
भित्र जगा नी भैर खत्यूं छ
मन्खि त छोड़ा गोरु नि खाणा
जै बोला! जिमदार-किसाणै
धन्न अज्यूं बि माटु चपाणा
ये रज्जा! ये छन परमेसुर !
ये त अंक्वेकि बखैभि निजाणा
फोटुंमा रंगत भरमैगे
सम्णि ऐ गयां तभि नि पछ्याणा
पर भै! तुम त यनी भलऽ लगदां
सुद्दि किलै छां मुक लपताणा
अक्कल हो, नक्कल हो दादा!
सक्कल पर बाराई बजाणा

नाप

ब्वनद्या यूं ! जो ब्वना छन क्याप
ज्यूंदा छां! यूंका परताप
वूंको सुभौ ! छ त सर्ग जनो
घडि. मा औडळ घडि. मा साफ
धर्ति छ रिंगणी वो बैठ्यां
रिंगदा! रूंदा सदानि ब्वे-बाब
जै भि नि बोले! सै भि किलै
जाणिक झूठ बरोबर पाप
गिच्चऽ बुज्याणै सैजि कळा!
गल्वड्यूं पंचि अंगुळ्यों की छाप
आला-काचा नर माराज!
भूल-चूक करि देणी माफ
बौना यखा बावन आंगुळ
लंका मा 'बावन' गज नाप !

❑❑

बैरि

वे का कुजऽणि कति कर्म कर्‌यान
वे का खणि कति नौंभि धर्‌यान
काळु न सौंळो गिंवऽळु न गोरो
वे पर कन सभि रंग चर्‌यान
अंसधरि मा पर वी कन बौगे
वेका बसगळि गदना तर्‌यान
यीं मंथा मा सभि छन मंगता
क्यान बतेरा भित्र भर्‌यान
मुलमुल्य हैंसि क्य मोल क्य पैंछी
मिलिजौ कखि त समाळिक ल्हान
जीवन इतगा गरु भि नि होंदो
जिकुडि.मा कख-कख बूज मर्‌यान
वो ! बस गाळी खैकि बच्यूं छ
हौरि त भौं-कुछ खैकि म्वर्‌यान
कैं घडि.मा छि! जल्मि यो बैरी
वे देखी कै बैख डर्‌यान

रौत जी

इतगा भी नाराज नि-होणू रौत जी!
गिच्चु तुमारू अळगायूं छौ भौत जी!
आंखौ छोड़ी पाणी सबि सरकार को
पेणा छा कि नयेणा खौतमखौत जी!
उर्‌या तमाशो यखा तमसगिर खूब छन
पच्छि कुजाणे घर नि-आणिद्यो सौत जी!
क्याप ब्वना छा यूं तिलु मा बल तेल नी
द्यू छ भम्कणू लामी होणी जोत जी!
बद्दि रड़ा बल क्वी अजमयूं इलाज हो
क्वी बचिजालो कैकि त होली मौत जी!
दोष त ज्यूंदौ होकि म्वर्‌यां को दोष छ
भैर लिपायूं भित्रू छड.क्यूं गौंत जी!
द्यब्तौं का नौं होण लगे बिखळाणसी
यख छ भूत पुजौणै चैल-चलौत जी!

❑❑

गंज्यळि गीत

• गीतेश सिंह नेगी

जिकुड़ा फुक फुकीक उज्यळा कन्न करदा ह्वाला लोग।
अपणा हथौंल कत्तर कळेजौ को कन्न करदा ह्वाला लोग।।
मिसै नि करेन्दो कत्ल कैका बि अरमानो को अब।
जिकुड़ि कैकि कन्न छलणी-छलणी करदा ह्वाला लोग।।
एक हैंका थैं हम कब्बि अंक्वै हेरि नि सकदा।
अन्वार ऐनौं मा अपड़ि कन्न देखदा ह्वाला लोग।।
वा घिन्डुड़ि फुर्र उड़ि ग्याई आखिर अगास।
गौं का गौं किलै बाँझा करदा ह्वाला लोग।।
जिंदगि त्यारा वाड़ों फर अलझ्युं स्वचणु रौं मि।
ढुंगा कळेजौं फर आखिर कन्न धरदा ह्वाला लोग।।
कूड़ि पुंगड़ि जमीन जैदाद सब्बि बटे ही जंदिन 'गीत'।
ब्वे बाबुक कळेजौं का कत्तर कन्न करदा ह्वाला लोग।।

गंज्यळि गीत

• पयाश पोखड़ा

ग्वाया लगांदा चौमासा थैं देळि उगड़णि दे।
लगुलि रितु बसन्त कि ठंग्रि मा चढणि दे।।
फोळि सि हुटण्यूं की डिमडळ्यूं थैं ठसोळिक।
दळ्म्यां का बियौं थैं मुलमुल हैंसणि दे।।
फीकि मळमळि अर बकळि सि जीभि मा।
हिंसोळा किनगोड़ा कि मिट्ठि बूंद तरकणि दे।।
उल्यरा दिनु थैं अबि सौरास नि पैटैई।
दिन चारेक रंगमत मैना थैं मैत मा रणि दे।।
धगुला झिंवरा जिकुड़ि थैं आंख्यूं मा पैजमी।
स्वीणो थैं चूड़ि फूंदा अर बिन्दी पैरणि दे।।
क्वीनों ल घचकाणि च या छमना हवा।
मीथैं थड़्चा चौंफळा गीतु दगड़ उडणि दे।।
दुख खैरि फर अब खुटळि जिबाळ लगैदे।
बौळ्या बणकै पयाश थैं गौं मा रिटणि दे।।

❑❑

मैं उत्तराखंड बोनू छौं

• कविता भट्ट

क्वी मेरि खैरि बि सूणा
क्वी सूणा मेरु दु:ख
सोळा बरस की उमर ह्वेगि पर
कबि नि पायि सुख
यना हालूं मा रोणू छौं
मै उत्तराखंड बोनू छौं।

मेरा जलम का खातिर
कति ल्वे बौगी सड़क्यों मा
ज्वान दाना अर बाळा बि
उतर्यां छा सड़क्यों मा
मैं सदानी तौंकू ऋणि छौं
मैं उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी मेरि खैरि बि .....

राजनीति का रज्जों से
सदानि लुटेणू रयूं
सबुन अपणी राश भोरी
मै भूखू तीसू घुट्यणू रयूं
मै ल्वै का आंसु रोणु छौं
मै उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी मेरी खैरि बि .....

न त ज्वानि काम औणि यखै
न पाणि काम औणू छ
क्वी काम कन्न नि चांदु अर
काम धै लगाणू छ
मैं भौत हरान होंयू छौं
मै उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी मेरि खैरि बि.....

सबि यख बिटि भैर जाणा
मेरी आस सांस तोड़ी
फिर भी मैं सास लग्यूं छौं
मेरा मैमा औला बौड़ी
मैं तौंतै धवड़ि लाणू छौं
मैं उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी मेरी खैरि भी.....

गौं गुठ्यार सुन्न पड़्यां
सग्वड़ी पुंगड़ी बांजा पड़ीं
काम कर्दरौन देखा
सैरी देवभूमि भरीं
परदेश्यूं दगड़ि घुळणू छौं
मै उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी मेरि खैरि बि.....

आपदा की मार देखि
दुख बार बार देख्यां
डांडा मैन रड़दा देख्यां
मनखी मैन बगदा देख्यां
मै आपदा को सतयूं छौं
मै उत्तराखंड बोनू छौं ।
क्वी मेरि खैरि .....

आस लगीं मैते बि कबि
मैं फर भी मौळ्यार आली
मेरी देवभूमि मा फिर
द्यबतों की अन्द्वार आली
मैं यीं आस फर ज्यूंदू छौं
मैं उत्तराखंड बोनू छौं।
क्वी म्येरी खैरी भी .....

गढ़वाळा विकासौऽ गीत

• भगवतीशरण बुड़ाकोटी

देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ डांडा मारो थार,
गौं-गौं मा भट्टी खुलनी कच्ची की बौछार।
कच्ची की बौछार, दर्वाळ्यों की बार,
जनन्यूं की ह्वे थिंचाई नौंनौं पड़ी मार।
भांडि-कूंडि सब बिकनी मवसी लगी धार,
हूंदि-खांदि मवासी अब कन कगांल ह्वा।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ द्यबता लागी दोष,
नौना बाळा चेली च्याला दिल्ली जाणै रौंस।
दिल्ली जाणैं रौंस, घार की नी होश,
घार रैनी बूढ बुढ्या द्वी का द्वी बेहोश।
दिल्ली बैठी गोष्ठी करनी पाड़ विकास को जोश।
पितरों की तिबारी अब कन खंद्वारी ह्वा।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ मखमली बुग्याळ,
घार का नौना बेरोजगार सिर्फ खाणाऽ काळ।
गौं-गौं मा बजट आनी ध्याड़ी करणा डुट्याळ,
रास्ता मा सीमेन्ट लगणी बगि जाणी बसग्याळ।
विकास को पैसा ऐनि नेता मालामाल,
काम करणो देशी जेई सबि गोळमाळ।
बिना पाणी की कूल स्या गौं मा आई ग्या।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ चरै जाला गोर,
हर्चि गैन थड्या गीत पोप को छा जोर।
भूलि-भालि पण्डौं नाच डिस्को कमरतोड़,
दारु पेकी द्यबता नचदा ताबड़तोड़,
जगरी जी की बार प्वड़नी ब्वगट्यों को निमछोड़।
पुरणों कि य थात झणि कख हर्चि ग्या।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ काटी जालो घास,
पढ़नी लेखनी छोड़ि-छाड़ि नकल की आस।
नकल की आस पांच साल ह्वेगीं दिदा दस नी हूंदो पास,
दिनभर ब्वगट्या मैच पुंगड़्यों का नाश।
भोळ की या पीढ़ी बल कन खतेई गया।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ खायो चा अचार,
गौं-गौं मा स्कूल खुलनी शिक्षा को प्रचार।
पांच-पांच मैडम ह्वेनी बच्चा केवल चार,
सौ बच्चौं मा एक गुरुजी जग्वळणा धार।
पढ़ै होंदी द्वी ही दिन मीटिंग दिन चार।
शिक्षा प्रणाली को कन बंटाधार ह्वा।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
आ ऽ ऽ ऽ तराजू की तोल,
अलग ह्वेगी उत्तराखण्ड वो भी गोळमोळ।
कख बणली राजधानी होयूं छ घपरोळ,
नैतौं मा छ खींचताण हुंयीं छ जन बौळ,
कख्वै आलो खर्चा पाणी होयां छीं घंघतोळ।
बांझ गौं पधान घंड्यूड़ू बणी ग्या।
देवभूमि गढ़वाळ तेरो कनो विकास ह्वा।
ऋषिभूमि हिंवाळ तेरो कनो विकास ह्वा।

❑❑

दिनेश कुकरेती

पीड़

जल्ढ वट्यों मा म्वारा नि छन
तिबर्यों मा द्वार नि छन
हम बिसरी ग्यां सबि धाणि
गौं बि हमरा सारा नि छन।
पुंगड्ढ यों मा मलढ सु जम्यूं
सग्वड्ढ यों मा कंडलीढ बुट्या
उज्यड्ढ या गोर हकाणौ बि
अब त गौं मा छ्वारा नि छन।
उर्ख्यल्ढ यों को नौ नि राई
गंज्यल्ढ यों कु ठौ नि राई
पर्या/डखुलाढ उतणा हुयान
मोलढ धुंलौढं ड्वारा नि छन।
गणती का मवसा रै गैना
नाता/रिश्ता बुसगी गैना
अणसलाढ बांजा पुड्ढ यान
गौं मा अब लुहारा नि छन।
स्वचदू छौं मि भेटी ऐ जौं
अपणी जलमभूमि माटो
जौं त जौं पर कैका सारा

❑❑

फटकताळ

हमरि मवसि बणै जा परमेसुर
तौंकु निर्बिजु कै जा परमेसुर।
ब्यालि बटि च घड्यलिढ वीर्योंए
अब त पर्चु दिखै जा परमेसुर।
त्यारा नौं कु जु बुगठ्या लगयूं ए
वैकि लाज बचौ जा परमेसुर।
सिरी-फटी सबि बांटि यलींए
ल्वतगी भोग लगै जा परमेसुर।
सच्चु छै त तौंकि करीं/धरीं माए
जख्या भंगुलु जमै जा परमेसुर।
आलाढ/काचा जनि बि छवांए
हमुतै बाटु बतै जा परमेसुर।
हमरा गोर सदनी दुधालढ रयांए
तौंका भ्यालढ लमडै जा परमेसुर।

लालसा

जनि छै तनि रै जांदि त क्या ह्वै जांदुए
द्वी घडिढ मैमु ऐ जांदि त क्या ह्वे जांदु।
पर तु त खयेली तौंकी शिकासर्यूं नाए
खुद मेरी बिसरै जांदि त क्या ह्वै जांदू।
तिन त लव यू बोलिक फर्ज निभै द्येए
गालुंद झुंट्ये जांदि त क्या ह्वै जांदु।
प्यार क्वी ज्यू बुथ्याणा कु खेल नीए
यु तू बि चितै जांदि त क्या ह्वै जांदू।
तु तनै खत्येणी रैए मि इनै खत्येणू छौंए
मालाढ सि गंठ्ये जादि त क्या ह्वै जांदू।

❑❑

एक ढुंगो विकास को

• देवेन्द्र उनियाल

एक ढुंगो विकास को
जु हौड़-हौड़ फरकेगी
धारू-धारू लमडेग्ये
पर गौं का काम नि ऐ।
इन नीछ ये ढुंगन,
ताणि न मारि होन
यो लग्यों रै
ये गौ का छोटा बड़ा काम मा
कभि मनरेगा
कभि जवाहर मा
कभि गदरों कबि धार मा
कबि चाळ
कबि खाळ मा
कबि चैक डैम
कबि घेर बाड़ मा
तुम्हारा हमारा गौं का विकास मा
जो कखि नी छ स्यु अचक्याल
सिलान्यास मा
ज्वी औणु सी फरकौणू
एक चिणणु
हैंको उजणणु
देशी विदेशी, अर हमारा भै बन्द
जो तुम्हारा हमारा बीच का छन
चलाक चण्ट-मण्ट
फोड़ना छती
मना चोटि
ए गौं का विकास का बाना
अर जब विकास का रुप्या ऐन
तौंन गदनों
अर ढौण्डो खडेनि
जनता की मवसि
टोटगी करीन
अपणि मवसी ठडेनि
आज स्यु बि चलगिन
ये गौं छोड़गिन
अब गौं मा

मनखि कख छन
पर ढुंगा बि गिणती का छन रंया
(किलै की सारा ढुंगा त विकास का कार्य मा लगगिन)
जो मनखि छन बि
हे रां स्यू
ढुंगै जन छन बण्या
अब ढुंगु ढुंगै मा बोन्नू
मनखि दगड़ि अफ तैं तोनू
हमारू अपणो समुदाय छौं,
अपणो समाज छौ
मनखि त आज ह्वेनि
पैलि ढुंगों को राज छौ
ढुंगा नि छा हम
यों का देवतौ का अवतार छा
यो का क्षेत्रपाल, भैंरो, नरसिंग, नागराजा
अर यो का बद्री-केदार छा
पोतरा छा या घंघतीर
धारा छा या पन्देरा
हम सबि जगौं पुजेन्दा छा
जौ जस देन्दा छा
भै भयात बर्णी रौ
यो का ओडा बिट्या बण्यां हम
म्वन बचणो साथ छौ
पितर कूड़ा बैठी कि
यो का लिंग लोड़ा बण्या हम
जौं तैं समझणा
तुम गारा
हम छा ये गौं की बिसौणी
हमुन बि सैन कथगौं कै भारा
कतनै घसन्यों का करीन
काखा हळका
कथगौन हमुमा थक बिसै
अपणि खैरि लगै

पर रै विकास का मनखि
अफु तु उब उठि
अर हम तैं तिन
वुंदु रड़ै।
पर नि छा हम तेरि चार हल्का
कि जरा सि बात मा
रौड़ि जां।
अपणों ठौ छोड़ि जां
हम जाति का छां
खाणि का छां
टस से मस नि ह्वेयां
अपणि जगौं बटिन
ये मनखी देखा हमसणें
मारिन घौंण अर सबळों की चोटि
अर आज चौरंगी बणैकि
विकास का खड़ंजों मा खडेली
जम्या ढुंगा छा तुमारी बाप दादा कि
साख्यूं बटिका
अफ तू मनखि को मनखि रै
अर हमतैं तिन ढुंगो बटिन गारा बणैली
अब जो यो बाटों हिटणो छ
स्यो यखि अळजणो छ
जो चलगि गौं छोड़िक
जैन फरकैलि ढुंगो
स्यो विकास समझणो छ
स्यो विकास समझणू छ।

❑❑

पहाड़

• प्रभात सेमवाल

बाँज डाळि उदास घुघूती हिलांस!
डांड्यों मा खुदेणां खिल्यां बुरांस!!

अब क्य कन कैका औणा कि आस!
टुटी जांदू ये मन कु विश्वास!!

कख गै स्यो बसंत ऋतूराज!
पोड़िगे कख निचन्त स्यो आज!!

कख हर्चीगे बरख्याळु चौमास!
मिलिगे कख वे यनु अगास!!

डांडी खोजणीन मन कु उयार!
कख लुकीगे स्या बसग्यळि नयार!!

पौन पंछी चलि उड़िगेनि अगास!
रैगै ये मन अब इखारी साँस!!

औंदु ये मन मा भारी उमाळ!
पहाड़ का छन ये ब्यूंत विचार!!

❑❑

नौं धरि बिकास

• देवेश जोशी

बिकास खुणी हम छिन कि हम खुणी यू बिकास।
होण खाण की च आस या सदानिकू च बिणास।
रंगिला सुपिन्या देखदेखी बणिग्ये या जिंदगी बेरंग
बर्सू बटि ठगणू च बनिबन्या नौं धरी बिकास।

कुंगळी डांड्यूंकि कोख कोरी कोरी खैण्यली
बम बारुदकि सड़कूं से छलणी छत्ति कैर्यली
कच्चा पुस्तूंकि सड़क ठेकदारी होणी पक्की
कमीसन की गाड़ी चलणी यख नौं धरी बिकास।

रात अंध्येरा टुप्प स्ये जांदी बिजदी दिन दोफरा मा
बिजली कम अर बिल ज्यादा औणू च अंध्यरा मा
बिना करंटा तारूं पर लगुला छिन लिट्यां लिट्यां
टार्च का सारा खुज्यौंदा बिजली राणी कू प्रकास।

गौं का गौं उज्यड़ गैनी गाड घाटी डाम डामीक
ज्वान दाना बाळा बौग्या थमैण्या नी थाम थामीक
बिजली सैणा सरकिणी सर्र बाढ़ रगड़ा उब्ब पाड़
सुरंगुंका बरछा घुप्यां डांड्युं मा नौं परैं बिकास।

बिना मास्टरूंकु रोंदू भविष्य पढ़ौणी च इसकूल
बिन डाक्टर बिमार असपताल पेट पिड़ा सूळ
सर्ग दिदा पाणि पाणि तीसा नलखूं की च गाणि
बिकासऽ बौड़ बिगड़यूं च पैटावा ये बणावा दास।

लोकल समैणा

• हरीश जुयाल कुटज

ओम नमो गुरु को जुहार
विद्यामाता को नमस्कार
अथ लोकल समैणा बिध्यान लिख्यते
तथाकथित का दस भाई कुर्सी हत्याण वळा
दस गाड-धारौं मा कच्ची बणाण वळा
तीन बैणी चलपटा, छमना, चिमलट्या
फैशनेबल चचगरौं वळि
सेंट, क्रीम, तेल, फुलैन का भभकरौं वळि
एक दफे लोकल समैणा इलैक्शन में खड़ो ह्वायो
तैका पीछा गढ़मुस्या मसाण
काळू मसाण, लालू मसाण, परछ्वा मसाण
घपरोळ्या मसाण, लींडी मसाणी
काळी, कळपटी, डूंडी-डागिणी
तब गौं गळ्या मा रामपुरी छूरा दिखायो
हवाई फायर से पब्लिक डरायो
पिस्तौळ की नोक से कैप्चर करवायो
पूरब में लौडस्पीकर बजावे
पश्चिम मा माल्यार्पण
उत्तर मा उद्घाटन करे
दखिण मा दारू का पौच पौंछावे
फिर कौलर खड़ा करी
योजनों की टांग चपाई
सात बजट खाई तौ बि नी अघायी
जख बि जायी फिर्रीफंड को खायी
क्या-क्या खांदी
खांदी रे यकतळू आमलेट
फाइव स्टार को मुर्गा-मटन
पेन्दो रे मिनरल वाटर
बोतळ को बेताल छयी
रैन्दो रे सात खण्ड की कोठी मा
अण्डर ग्राउण्ड मा तेरो बासो
तेरो काम मांगिकी खाणो, अकड़ से रैणो
मनिख्यों की शकल मा इच्छाधारी खबेश छयी

तेरी गळती-तेरी चलती
यकुल्याबीर-जड़कटानाथ
चलता नळकौं मा डाटमार
बणदो काम मा च्योलामार
काळा कुकरूं को गलादार
चल चल रे सीधीचाल चल
हराम को छोड़ लिमिट से खा
केरी आऊ रे लोकल समैणा
समाज को खरदूषण छै
मेरी केरीधारी मा नी रायो तो
हैलीकौप्टर मा नी उड़ण पायो
छपछपी कुर्सी मा नी बैठण पायो
डारेक्ट नरक की कुण्डी मा जायो,
गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति
हट-हट सुंगर सोसाइटी वळा
धुर्र-धुर्र
कुटजोवाचा।

❑❑

गिल्ली हम डण्डा क्वी

• डॉ० सत्यानन्द बडोनी

उत्तराखण्डै लड़ै
लड़ि थै हम्न
इत्यास साक्षी छः
लम्बा-लम्बा जुलूस, बड़ा-बड़ा नारा
कौदू-झंगौरु खौला, उत्तराखण्ड बणौला
नारी नि, चिनगारी छन
छेडला तऽ अंगारी छन
हम पिछाड़ि निन अगाड़ि छन
उत्तराखण्डा बाना माँ बैंणी दागेन
कै ज्वान-क्वांसा औलादी गैन
ब्वै-बाबा बुढ्यान्दि दाँ र्‌वैन
खूब दाळ-दळै हमारि जुकड़्यों
कैई घड़ियालि आँसू-बगैन
ऊँ तैं भागै-भत्ताक
हम तनि खौळेन
जुता खाई, इज्जत बचि
उत्तराखण्ड तऽ ना, उत्तरांचल मिलि
पौराणिक मानिता बि झूट्याई
अपणि टांग ऐंच, हैका टांग खैंच
इन रीत ह्वेगि हमारि
उत्तराखण्ड राज्य विरोधी
उत्तराखण्डा बणग्या पेंच
हम्न तऽ सोचि थौ
उत्तराखण्डा बण् पर
इखि वाळा होला धरता-करता
छोटा-बड़ा पदू तैं पाला
पर यू क्या
जु यखा का छये नी
वीई लोग
लठ्ठा लितैं हमतैं हांकणा
वक्त-बिवक्त हमतैं डांटणा
हम्न त सोचि थौ कि
अफि मा तिलू दाणि बांटला
अपणि छ्वीं अफि मा फांटला
पर आज
ग्राम सभा हमारि
प्रधान क्वी
जु यखौ कु छौ ही नि
डांटणू हम तैं आज स्वी
आज इन राज्य मिलि
गिल्ली हम डण्डा क्वी।

❑❑

उदीना

• राकेश मोहन कण्डारी

गढ़वाळि लोक गाथाओं मा जब भि गढ़राज्य का वीर सेनापति वीर भड़ माधो सिंह भण्डारी को नौं आन्दु, त वूंका दगड़ा रौतेली उदीना को नौं जरुर आन्द, लोक मानस मा इनु बुल्यै जांद कि उदीना माधोसिंह भण्डारी की मायादार छैं, कैई पवाड़ो मा उदीना को जिकर आन्दो, फेर बि उदीना तैं भौत कम लोग जाणदिन।

एक लोक कथा का अनुसार उदीना गढ़ की रौतेली उदीना बांद माधो सिंह भण्डारी कि प्रेमिका छै, उदीना बाँद माधोसिंह तै सुपिना मां दिखेन्दी।

सुपिना का दंद देखे, उदीना बौराण,
फुलु सी कुटकी देखे धार जसी गैणी,
नौण सी गुंदकी देखि, दिवा जसी जोत,
मन हवैगे उदास भण्डारी, चित ह्वेगी चंचल,
चचड़ैक उठि भण्ड़ारी भिभडैक बैठि।

स्विपना मा रौतेली उदीना को रूप यौवन देखी कि माधो सिंह हक्क रै जांद अर कै दिन तलक उदास रैंद तन माधोसिंह उदीना गढ़ जान्दो, अर उदीना गढ़ पौंछी कि उदीना तैं वैं ही रूप मा पैंकी खुशमन ह्वै जान्दो।

छडियालों सेंन्दुर देखी, बिन्दयाळु गाजल/
जन्नि देखी स्वीणा भण्डारी, तन्नी पाए वीणा,
धार जसी गैणी देखी, फुल्लु सी कुटकी/
नौण सी गुंदकी देखी, दिवा जसी जोत।

माधो सिंह भण्डारी जब उदीना गढ़ बटै वापिस औण लगदो तो उदीना बोलदी—

शेर ह्वैकी आई भण्डारी, स्याळ ह्वैक जान्दो।

तब माधो सिंह यां को जबाव देदों—

तब चढ़े भण्डारी छतरी को रोष,/
छतरी को रोष चढ़ी दूध सी उमाळ,
दुध सी उमाळ चढ़ी सांप सी नंराद/
छतरी को बेटा होलु, त्वै विवै की लि जौलु,
साल छ मैना त्वै विवै की लि जौलु..../
हाथ की मुंदड़ी उदीना त्वै पैरेकी जान्दु।

लोक कथाओं मा इनि कथा आन्दी कि श्रीनगर दरबार का सेनापति होण का खातिर माधो सिंह भण्डारी राज काज मा इतथा रम ग्यैनी कि उदीना तै भूल ग्येनी। उदीना गढ मा या अफुवा फैल गी कि माधो सिंह लड़ै मा मारे ग्ये। उदीना का वै बावुन उदीना की मांगण कैर दयाई। उदीना भारी दु:खी ह्वै जान्दी।

भण्डारी लड़ै नैहगी, उदीना दु:खी ह्वैगी/
ऋतु बौड़ीक ऐगी, दाई जैसो फैरो,
भण्डारी लड़ै नैहगी, उदीना दु:खी ह्वैगी।

अब उदीना को ब्यौ को दिन भि ऐगी, गाजा बाजा वजण वैठि ग्यैनी उदीना बोलदी—

ब्यो मा सिणई ना बजा, मन खुदेन्दों मेरो.../
भैर बरात चढीगै, दु:खी मन जाणु पड़ीगे,
बचन बौल्यां तुम्हारा नी होया पूरा हमारा/
प्रगट ह्वै जा हे वीर जिकुड़ी ना लगौ वीर,
कख लुकी ग्ये भण्डारी, दासी छौं तुम्हारी।

ठीक ये ही बगत पर माधो सिंह भण्डारी एक भगत चंपु हुडक्या उदीना गढ़ पौछं जान्दो अर भण्डारी का गीत लान्दु...

उंचा लखनपुर रैन्द माधोसिंह भण्डारी/
वीरू मा को बीर होलो माधोसिंह भण्डारी,
शेरनी को जायो होलो माधो सिंह भण्डारी,

उदीना हुड़क्या का गीत सुणदी त बीच मा चंपु हुडक्या तैं टोकदी अर बोलदी..

भण्डारी को नौं हुड़क्या कैक तू जप्पदो../भण्डारी त चंपु... लड़ै मा मारी ग्ये...

चंपु हुड़क्या की भण्डारी पर भरि आस्था अर विश्वास छ, वु बोलदो...

ना... ना... रौतेली...!!/सब्बि भरी जाला बौराणी,
पर भण्डारी नी मान्या/आज रूकै द्यावा बरात...
भोल आई जालो भण्डारी...।

अर उदीना तै आज भर बरात रूकाणे विनती करुदो तब उदीना अपड़ा बुवाजी मा विनती करदी..

आज को बसेरो मेरा बावाजी/केळों का बग्वान मेरा बावाजी,
बड़ो धियाण मेरा बावाजी/फैर मैतु नी आंदी मेरा बावाजी,
बरसु की पौणी मेरा बावाजी...

उदीना रौंतेली अपड़ा बुवाजी का हाथ खुटों पड़दी, बेटी तैं रोन्दो देखी बुवाजी भी माण जान्दन अर बोलदा...

तेरो बोल्यु मेरी लाड़ी.../
मैन मान्याली मेरी लाड़ी...
मि आज का दिन मेरी लाड़ी/
बरात रूकै देलो मेरी लाड़ी.....

अब उदीना का बुवाजी न बरात रूकै दिनी, चंपु हुड़क्या माधोसिंह भण्डारी को सुमिरण कनु चा...

कख लुकि तेरा गुरु माणिक नाथ, ऐलो भण्डारी जी...
तेरू वीर कैलापीर, ऐलों भण्डारी जी.../
स्या बाळा सुन्दरी, ऐलो भण्डारी जी...
देवी राजराजेसुरी तेरी, ऐलों भण्डारी जी.../
पौंठी की भद्रकाली तेरी, ऐलों भण्डारी जी...

अब माधो सिंह भण्डारी की इस्ट देवी राजराजेसुरी भण्डारी का स्विपना मा जांदी अर सेरी कत्था बिगांदी, माधो सिंह भण्डारी तैं उदीना रौतेरी तैं दियुं बचन याद ऐ जान्दो अर भण्डारी फौरन उदीना गढ़ ऐ जान्दो।

भण्डारी बिना शस्तर/हत्यार का आयुं छौ, उदीना भण्डारी तैं अपड़ा डोला को हत्यार देंदी तब भण्डारी शस्तर पूजा करदो...

तू त धरम को भाई मेरा तैगा लो.../
होलो जीवन को साथी मेरा तैंगा लो...
तु त दुश्मनी हत्यार मेरा तैगा लो.../
तु त सौरायाली ना आई मेरा तैगा लो...
सौराली नि लगाण मेरा तैगा लो/
पालकी मां बैठी जा मेरा तैगा लो,
चलौलु त्वै सुरीग मेरा तैगा लो/
मेरा दैणा हाथ आई जा मेरा तैगा लो,
त्वैन एक बौगों मारी सिर शम्ति चढ़ाई मेरा तैगा लो,
मेरा भण्डारी जी, मेरा भण्डारी जी.../
बैरी मारीक तैं, निखेरी करियालै
माधो सिंह भण्डारी.../
अपड़ा नौऊ की त्वैन नथुली पैरयाली,
फेरा फैरेल्या आंचल बढैल्या/
चंपु हुड़क्या सुत खुशमन ह्वैगे,
मलेथा औंण पर उदीना बौराणी व्यंग करदी.../
यो छ भण्डारी तेरो मलेथा...
यना सैणा पुगड़ा, बिना पाणी रगड़ा/
जख कोदो खाणु, गथु को फाणु...
माधो सिंह भण्डारी बोलदो.../
नी करणी उदीना तिन यनी गाणी,
तेरा मलेथा मैं ल्हयोलो पाणी/

तब माधो सिंह भण्डारी न मलेथा की ऐतिहासिक गूल वणाई–

क्वी ढोळा डला ढुंगा, क्वी ढोळा माटु/
माधो सिंह भण्डारी छेन्दु बणोन्दु,
मलेथा ह्वैगे पाणी को दु:ख/
ऐ जाली गूल सदानी को सुख,
क्वी ढोळा डला ढुंगा क्वी ढोला माटु/
माधो सिंह भण्डारी गूल बणोन्दु

❑❑

एक जरूरी सूचना

धाद अपणा पढ़दरौं का दम पर प्रकाशित होणी छ। अपणि भाषा का वास्ता धाद पत्रिका लेखदरौं, पढ़दरौं अर मौ मदद करदरौं का सहयोग से मैना-मैना छपेणी छ।

धाद का पाठक अर एजेंट अपणि सदस्यता कि म्यळाग नेफ्ट से आनलाइन कर सकदन। हां भुगतान करणा बाद 09412079537/09756600537 पर एस०एम०एस० करी सूचित जरूर कर देण।

धाद

भारतीय स्टेट बैंक
शाखा-पौड़ी
खाता सं० : 35134541198
आईएफसी कोड : SBIN0000697

थड़िया चौंफुळौं को कौथीग सलाण मा

• धर्मेन्द्र नेगी

उत्तराखण्ड की सभ्यता संस्कृति, परम्परा अर भाषाओं का संरक्षण अर संवर्धन का वास्ता देशुं-परदेशुं मा सांस्कृतिक अर साहित्यिक आयोजनों की कुछ सालों बिटि बाढ़ सि अर्यी छ। कई प्रकार की संस्था अर एनजीओ ये क्षेत्र मा काम करणी छन। शहरों मा बड़ा-बड़ा आयोजन होणा छन कौथीग उर्येणा छन पर घर गौं मा जो कौथीग अर थौळा-मेळा उरेन्दा छया वूंको थाळु सदनि-सदनि को खरेणू छ। आज जरूरत छ त यूं थौळा-मेळौं तैं पुनर्जीवित करणा कि।

यीं ही बात तै सोचि की म्यारू मुलुक संस्था चौबट्टाखाल अर चौबट्टाखाल क्षेत्र मा कार्यरत जागरूक कर्मठ अर संस्कृति प्रेमी शिक्षकों न ग्राम सभा सलाण पट्टी किमगड्डीगाड क्षेत्र पोखड़ा पौड़ी गढ़वाल का ग्रामवासियों की मदद से ग्राम सलाण मा महिला मंगलदलों की एक लोकनृत्यगीत प्रतियोगिता को आयोजन कैरी।

मां दीवा भगवती का खुचलि मा बस्यां हैरा भैरा गौं सलाण का चन्देश्वर महादेव मन्दिर अर रा०प्रा०वि० सलाण का प्रांगण तैं आयोजन स्थल का रूप मा चुनि कि आयोजकों न यो साबित करणा को प्रयास करी कि अपणि सभ्यता संस्कृति अर परम्पराओं तैं बचाणा कि जरूरत सबसे ज्यादा अपणा गौं मुल्क का दूरस्थ क्षेत्रों मा छ न की शहरों अर महानगरों मा।

बिना सरकारी अनुदान का ये कार्यक्रम तैं करणा की आयोजकों न मन मा ठाणी। क्षेत्रीय शिक्षको गिरीश सुन्दरियाल, श्रीमती बबीता नेगी, दिनेश नेगी, वीरेन्द्र रावत, सुरेन्द्र गुसांई, पदमेन्द्र रावत, अरूण थपलियाल, सुनील रावत, मनोज रावत, संजय कुमार, महिताब रावत, जयपाल सिंह, धर्मपाल नेगी, राजेन्द्र सिंह आदि न कार्यक्रम की आर्थिक जिम्मेदारी अपणा कंधौ मा लेई। सलाण गौं का श्री नारायण सिंह रावत जी तैं कार्यक्रम मा आयोजन का वास्ता अध्यक्ष की जिम्मेदारी दिये गे। ग्राम प्रधान सलाण श्रीमती विमला नेगी जी अर महिला मंगल दल सलाण की अध्यक्ष श्रीमती मालती देवी जी न ये कार्यक्रम मा अपणो पूरो सहयोग देणा को आश्वासन दे।

19 मार्च, 2017 तैं आयोजन का वास्ता चुनेगे। नजीक गौं मा प्रतियोगिता का आयोजन अर नियमों की सूचना पौंछये गे। प्रतियोगिता का वास्ता भोजन की व्यवस्था सलाण गौं का लोगोंन करी।

19 मार्च, 2017 को सुबेर 10 बजि तक प्रतियोगिता का वास्ता पूरी तैयारी आयोजकों द्वारा पूरी ह्वेगे छै। प्रतियोगी टीम बि ठीक टैम पर आयोजन स्थल पर पौंछिगे छै। पोखड़ा विकासखण्ड का ब्लाक प्रमुख सुरेन्द्र सिंह रावत मुख्य अतिथि का रूप मा अर जिला पंचायत सदस्य श्री प्रवेश सुन्दरियाल जी विशिष्ट अतिथि का रूप मा आमंतित्र छा।

यी प्रतियोगिता मा नजीका ग्रामसभाओं की 13 टीमोंन प्रतिभाग कैरी। प्रतियोगिता मा निर्णायको की भूमिका निभै प्रसिद्ध साहित्यकार अर रंगकर्मी मदन डुकलान जी, साहित्यकार अर पत्रकार गणेश खुगशाल गणि जी, साहित्यकार अर रंगकर्मी त्रिभुवन उनियाल जी प्रसिद्ध निर्देशक अनिल बिष्ट जी अर साहित्यकार अर शिक्षक धर्मेन्द्र नेगी न।

संगीतकार का रूप मा श्री रमेश बडोला, किशोर पोखरियाल, अनिल ध्यानी, सुदर्शन बडोला अर संदीप बन्दूणी जी उपस्थित छा।

प्रतियोगिता द्वी चरणों मा सम्पन्न करयेगे। पैलो चरण 10 मिनट को अर दूसरो चरण 7 मिनट को रखेगे छौ। सबसे पैलि मेजबान टीम सलाण-ए न जौंला मंगरी थड़ियागीत प्रस्तुत कैरी फिर मालकोट की टीमन बाटा की बाड़ी, फिर किमगड्डी लंबाटियाल की टीमन गंगा रै थेपसिंह, चोपड़ा की टीमन राणीरूद्रा फिर पालीधार की टीमन गीत लाणा तान्दी, फिर सलाण-बी की टीम न दनपादियों, किमगडी पडियाल की टीमन कुन्ती का पंडौं फिर चरगाड अर फिर झलपाणी की टीमन वीरों का सूवीर फिर ड्वीला मल्ला की टीमन गागुल लसकमरी फिर श्रीकोट की टीमन फूलों मा को फूल, फिर गवाणी की टीमन पयां बांजा बुरांशी अर आखिर मा ड्वीला तल्ला की टीमन जौंला मंगरि थड़िया नृत्यगीत प्रस्तुत करी।

प्रथम चक्र का बाद भोजनावकाश करेगे। भोजनावकाश मा बच्चों न मंच पर थड़िया चौंफुला गीतनृत्य प्रस्तुत कैरिकी आयोजकों का ये आयोजन तैं उर्याणा का उद्देश्य तैं साकार करी।

भोजनावकाश का बाद प्रतियोगिता का दूसरों चरण प्रारम्भ करेगे। सब्बि टीमोंन अपणि-अपणि जबरदस्त प्रस्तुति देकी निर्णायकों का सामणि निर्णय का वास्ता मुंडरो कैरि दे। सब्बि टीम पूरी तैयारी पारम्परिक वेशभूषा अर आभूषणों तैं पैरिकी प्रतियोगिता मा प्रतिभाग करणी छै। क्वी बि टीम कैसे कम नि छै। प्रतियोगिता का बीच जितणा का वास्ता इथगा कड़ि टक्कर छै कि निर्णायकों को अस्यो-पस्यो छुटण लगिगे।

भौत कम अंको का अन्तर से मेजबान सलाण-बी की टीमन पैलो स्थान प्राप्त कै। दूसरा स्थान पर रैनी पालीधार की महिला अर तिसरा स्थान पर रै मालकोट की टीम। वूं तिन्या टीमौं तैं आयोजकों द्वारा सुन्दर ट्रॉफी अर नकद धनराशि से सम्मानित करेगे। अन्य प्रतिभागी टीमो तैं बि स्मृति चिन्ह अर 500 रू0 को सांत्वना पुरस्कार देकी सम्मानित करेगे।

यीं प्रतियोगिता की सार्थकता यीं बात से प्रतीत होंद की प्रतियोगिता का वास्ता एक मैना पैलि बिटि गौं-गौं मा तैयारी शुरू ह्वेगे छै। प्रतियोगिता की तैयारी का बाना गौं का ननतिना अर ज्वान अपणि यीं हरचिदी विरासत से परिचित ह्वेनी।

प्रतियोगिता का दौरान ही जब एक छ्वटि सि नौनी आरूषि लगभग 2-3 साल की रै होली जब स्वेच्छा से मंच पर प्रतियोगिता की सिकासैरी करण लगी त लगि कि ये कौथीग तै उर्याणा को उद्देश्य सफल ह्वेगे।

यीं प्रतियोगिता का बाना हैरा-भैरा आबाद गौं सलाण तैं द्यखणा को मौका मिली अर मन की या भ्रान्ति दूर ह्वे कि पहाड़ का सब्बि गौं उजाड़ अर पुंगड़ा बांजा होणा छन। ये गौं कि सबसे बड़ि विशेषता गौं वळौं को आपसी प्यार प्रेम अर एकजुट एक मुठ ह्वेकी काम करणा की भावना छै। प्रतियोगिता सम्पन्न करवाण मा गौं का सब्बि ननतिना ज्वान अर दाना दिवाना रात दिन मेहनत करणा रैनी अर वून यो साबित करिदे कि आपसी एकजुटता से बड़ा-बड़ा आयोजन बि निर्विघ्न सम्पन्न करवाये जै सकेंदन।

❑❑

एक संस्था इनि बि—भलु लगद

• शुभा बुड़ाकोटी

गढ़वाळि संस्कृति की एक परंपरा अपना आप मा विशिष्ट छ, अर व या कि जब बि गौं-गौळा मा क्वी भलु बुरु काम होंदु तब लोग अपड़ी सामर्थ्य का अनुसार वे काम मा मौ-मदद करदा जब वे काम का गुणगान करणा कि बारि आंदि तब ब्वलदा—होंद त क्या छ पर भलु लगद, अर यो शब्द ही ऊँकि नम्रता, मयळ्दुपन अर बड़ापन तैं साबित करदो। यो शब्द जन पर्या थे बि अपड़ो बणै देंद।

'भलु लगद' ये भाव तैं ही मन मा धैरी कि एक संस्था 'भलु लगद/फील गुड' नाम से लोगुं थे 'भलु लगद' को एहसास करवाणि छ। ईं संस्था का संस्थापक श्री सुधीर सुन्द्रियाल जी मूल रूप से पौड़ी जिला, पोखड़ा ब्लॉक का डबरा गांव से छन। तन मन मा पहाड़ और पहाड़ी संस्कृति का प्रति प्रेम रखण वळा, सेंद-खांद, उठदा-बैठदा केवल पहाड़ का विकास का सुपन्या द्यखण वळा श्री सुन्द्रियाल जी न संस्था की स्थापना करण से पैली दिल्ली का AIMS अस्पताल का ऑर्बो सेंटर मा अपुड्ड सम्पूर्ण शरीर को दान करि देनी और इतना ही न ऊंन अफ दगड़ी अन्य लोगुं थैं बी ये काम को प्रेरित करि। ऊँकी प्रेरणा से अब तक ये काम मा 9 लोग जुड़ गेनि जौंन अपड़ शरीर का कुछ अंग को दान करि दे। सुन्द्रियाल जी को सफर इतगा आसान नि छौ। पर बोलदन कि-देर होली, अबेर होलि, होलि जरूर सबेर होलि अर बस ईं मिसाल तैं साबित करणा क वास्ता सुन्द्रियाल जी न अपड़ी सर्या सक्य पहाड़ का बिकास मा लगे दे। सुन्द्रियाल जी का सफर की शुरुआत ह्वे करीब 3 साल पैली। रिवर्स माइग्रेशन को उदाहरण देण वाळो यो आदिम, यैसे पैली इंडिया टीवी चैनल मा काम करदो छौ। वेका बाद सुन्द्रियाल जी न मन बणे दे अपड़ी मातृभूमि को

ऋण चुकाणा को। शुरुआत मा परेशानी भी भौत ऐ, अपड़ पर्या लोगुं कि भली बुरी बथा बि सुणी, कतगे लोगु न घचगै छ पर सुन्द्रियाल जी अडिग रें। अर जन कि ब्वलदा छीं

कि—नारी न जब नर को दगड़ू निभाई, नर शक्ति न नारैण नौ पायी। सुन्द्रियाल जी की शक्ति थें दुगुणा करणा मा ऊंक दगड़ो निभै वूंकी धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता सुन्द्रियाल जी न, जो अपुड्ड काम धंधा छोड़ी की सुन्द्रियाल जी दगड़ ऐगीं।

सुधीर सुन्द्रियाल जी द्वारा स्थापित संस्था 'भलु-लगद/Feel Good' पहाड़ मा शिक्षा अर कृषि का क्षेत्र मा विशेष रूप से काम करणी छ। गरीब एवं निराश्रित बच्चों थै या संस्था मदद करदि। अबि वर्तमान मा ईं संस्था मा 17 बच्चा छीं जौं कि शिक्षा को पूरो खर्चा संस्था ही उठान्दी। प्रतिवर्ष संस्था नया निराश्रित बच्चों की मदद करणा म एथर आंदी अर वूंथे शिक्षा क प्रति जागृत करदी। बच्चों की शिक्षा को गाँव-गाँव म क्लास लगदीं। ग्राम चरगाड मा बच्चों की ट्यूशन अर कंप्यूटर क्लास बि लगदि जख ईं संस्था का 10 बच्चों सहित अन्य बच्चा भी लाभान्वित होणा छन। दगड़ै चौबट्टाखाल, चमनाऊं और सलाण गौं मा बच्चों की 'एक्स्ट्रा एक्टिविटी' क्लास प्रत्येक रविवार को लगदी। चौबट्टाखाल मा श्रीमती निर्मला सुन्द्रियाल, चमनाऊं मा श्री मातबर सिंह एवं सलाण मा अल्का रावत का निर्देशन मा ये क्लास लगणी छीं। भविष्य मा ग्राम किमगड़ी, लवींठा अर दाँथा म बि ये क्लास लगलि। य संस्था निराश्रित बुजुर्ग लोगुं थै बि जीणा कि राह दिखाणी च। वर्तमान मा 2 निराश्रित बुजुर्ग ईं संस्था द्वारा लाभान्वित होणा छन। ऊँकी दवै-दारू, लती-कपड़ी और भी अन्य खर्चा संस्था स्वयं उठान्दी।

कृषि का क्षेत्र मा भी संस्था बहुत कम समय मा बहुत अच्छु काम करणी छ। संस्था द्वारा बांजा पुंगड़ो थै आबाद करणा कि एक मुहिम चलणी छ। कई बेरोजगार युवाओं थे बजंर खेत आबाद करो मुहीम दगड़ जोड़ना को प्रयास लगातार चलणो छ, जैका रिजल्ट दिखेंण बैठ गेन। ये से पैली ऊंल खुद छोटू ट्रैक्टर लेकी, पंतनगर म किसान ट्रैनिंग भी ले। अभी कुछ दिन पैली भी मैडिसन प्लांट पर भी एक ट्रैनिंग गढ़वाल यूनिवर्सिटी मा लेई। अबि बांजा पुंगड़ो मा साग भुजी को उत्पादन को काम संस्था करणी छ। गौं का लोग सुंगर-बान्दरू से डैरि कि लोगु न खेती करण छोड़यालि ये से निजात पाणा को संस्था लोगुं थैं, बाड़ लगेकि खेती करणा अर सिट्रस प्रजाति का पौधों जन कि माल्टा, नींबू आदि लगाणा को प्रेरित करणी छ। प्राकृतिक संसाधन को कनु फायदा उठा सक्दिन यो मेळु का डाळा पर रेड बाटलर की कलम लगे की दिखोंणा छन। आज कृषि विभाग द्वारा ऊँका सागसब्जी उत्पादन थे 2016-2017 की फार्मिंग स्कूल का रूप म मान्यता मिल गे।

श्री सुन्द्रियाल जी द्वारा धरातल पर बहुत बढ़िया प्रयास करैणा छन। अर ऊँका शब्दु मा-य त अबि शुरुआत च'।

❑❑